॥ श्रीविश्वनाथो जयति ॥

परलोक-रहस्य ।

भारतधर्मसिण्डिकेट लिमिटेडके द्वारा
श्रीभारतधर्ममहामण्डलके शास्त्र
प्रकाशक विभागके लिये
प्रकाशित।

प्रथमावृत्ति ।

काशीधाम।

श्रीयुत ए . एन्. वाग्ची द्वारा भारतधर्म
प्रेस, जगत्गञ्ज, बनारसमें
मुद्रित ।

सन् १९२४ ई० ।

मूल्य ।)

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञापन ।

यह सबको विदित ही है कि, काशीका 'निगमागम बुक-डिपो' नामक पुस्तकालय बहुत वर्षोंसे हिन्दू समाज तथा हिन्दी संसारकी सेवा करता आया है। अब तक यह पुस्तकालय श्रीविश्वनाथ अन्नपूर्णा दान भण्डार द्वारा स्थापित होकर उसीके अधीन रहकर संचालित हो रहा था। अब सनातनधर्मावलम्बियोंकी सर्वाङ्गीण उन्नतिमें सहायता पहुंचानेके लिये १० लाख रुपयेके मूलधनसे 'भारतधर्म सिण्डिकेट 'लिमिटेड' नामक एक कम्पनी संस्थापित हुई है, उसके अन्यान्य उद्देश्योंमें दो लाख रुपये लगाकर एक विराट् जातीय भण्डार स्थापित करना भी एक उद्देश्य है। उस कम्पनीने अपनी इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये उक्त निगमागम बुकडिपोको दानभण्डारसे ले लिया है. और उसका नाम न बदलकर 'निगमागम बुकडिपो' ही कायम रक्खा है। अब इस बुकडिपो विभाग द्वारा धार्मिक, सामाजिक और देशहित सम्बन्धीय अनेक पुस्तकें प्रधानतः हिन्दीमें और अंग्रेजी तथा अन्यान्य प्रन्तीय भाषाओंमें शीघ्र प्रकाशित होंगी।

नोट—इस पुस्तकके पिछले पृष्ठोंमें विज्ञापन द्रष्टव्य है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

परलोक रहस्य ।

मृत्युके अनन्तर जीवकी गति और कहीं होती है, अथवा स्थूलशरीर नाशके साथ ही साथ सब कुछ समाप्त हो जाता है, इस विषयमें ज्ञानी, अज्ञानी, मूर्ख, पण्डित, सुखी, दुःखी सभीके हृदयमें कभी कभी प्रश्न उठा करता है। उद्दाम अनर्गल इन्द्रियवृत्तिके वशीभूत होकर जो लोग इहलोकके विषयभोगको ही सब कुछ समझते हैं, उनके भी हृदयमें विषयभोगकी दुःखमय प्रतिक्रियाके समय अवश्य ही यह प्रश्न उठता है कि,—"क्या इसी प्रकारसे हमारा चिरकाल कटेगा या इन सब सुखके सामानोंको छोड़ हमें किसी अदृश्यलोकमें अपने कुकर्मोंके फलभोगके लिये जाना पड़ेगा ?" धर्मपरायण दुःखी जनोंके जीवनमें तो परलोक-चिन्ता तथा विश्वास परम अवलम्बनरूप ही है। क्योंकि धर्माचरण करनेपर भी जब वे देखते हैं कि, दुःखसे ही दिन कटता है तथा यह भी देखते हैं कि, प्रतिवेशी अधार्मिक दुराचारी पुरुष आनन्दसे आयु विताते हैं, तो उनके दुःखदग्ध हृदयमें परलोकपर विश्वास ही शान्तिसुधाका सिञ्चन कर सकता है और उनको यह समझा सकता है कि, धर्मपरायण होनेपर भी उनके इस जन्मका दुःख पूर्व जन्मके किसी दुष्कृतिका ही फल है और

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

इहलोकमें अनुष्ठित पुण्य कर्म्मोंका सुखमय सुफल उन्हें परलोकमें तथा परजन्ममें अवश्य ही प्राप्त होगा। इस प्रकारसे सुखी दुःखी धार्मिक अधार्मिक सभीके हृदयमें परलोक-चिन्ता तथा परलोकपर विश्वास होना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त जिस भाग्यवान् ज्ञानी पुरुषके हृदयाकाशमें ज्ञान-सूर्य्यका उदय हुआ है, जिसने ऋतम्भरा प्रज्ञाकी सहायतासे समस्त संशयजालको निवृत्त करके इहलोक परलोक तथा जन्मजन्मान्तरके रहस्योंको करतलामलकवत् आयत्त कर लिया है, जिस आत्मदर्शी श्रेष्ठ पुरुषके विचार तथा अनुभवमें आत्मा जननमरणहीन नित्य वस्तु तथा मृत्यु केवल स्थूल-शरीरका परिवर्तन और निद्राका रूपान्तर मात्र है, वह भी परलोकतत्त्वको एक रहस्यपूर्ण तथा अवश्य मीमांसायोग्य विषय समझकर, इस गम्भीर तत्त्वके समस्त सिद्धान्तोंको लोककल्याणके लिये प्रकट किया करता है। ऐसे ज्ञानी पुरुषोंको जीवका परलोकगमन या जन्मान्तरग्रहण कैसे अनुभवमें आता है, इस विषयमें श्रीभगवान् वेदव्यासने महाभारतके अश्वमेध पर्वके १७ अध्यायमें लिखा है :—

यथान्धकारे खद्योतं लीयमानं ततस्ततः।
चक्षुष्मन्तः प्रपश्यन्ति तथा च ज्ञानचक्षुषः॥
पश्यन्त्येवंविधं सिद्धा जीवं दिव्येन चक्षुषा।
च्यवन्तं जायमानञ्च योनिं चानुप्रवेशितम्॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

जिस प्रकार नेत्रसे युक्त मनुष्य अँधेरेमें जुगुनुओंको इधर उधर घूमते देख सकते हैं, उसी प्रकार ज्ञानचक्षुसम्पन्न सिद्ध महात्मागण जीवात्मा तथा सूक्ष्मशरीरको भी दिव्य-दृष्टिके द्वारा एक स्थूलदेह छोड़कर देहान्तरमें प्रवेश करते हुए देखते हैं। गीतामें भी श्रीभगवान्‌ने कहा है :—

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम् ।
विमूढ़ा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥

जीवात्मा किस प्रकारसे शरीरमें ठहरता है, शरीरमेंसे निकलता है या त्रिगुणके आश्रयसे विषयोंका उपभोग करता है, इसको ज्ञानदृष्टिसम्पन्न महात्मा देख सकते हैं, मूढ़ मनुष्य नहीं देख सकते हैं।

ऊपर लिखित विचारोंसे सिद्ध हुआ कि, परलोकके अस्तित्वके विषयमें चिन्ता तथा विश्वास करना जीवकी नैसर्गिक प्रवृत्ति है। वास्तवमें विवेकका गला घोंटे विना यह विश्वास हृदयमें नहीं जमने पाता है कि, अनन्त संसारका यह अनन्त असीम उद्यम सभी क्षणविध्वंसी होगा, इसका कुछ भी अवशेष या संस्कार आगे नहीं चलेगा, समुद्रतरङ्गमें बुलबुलेकी तरह प्रकट होकर पुनः समुद्रजलमें ही वे सब विलीन हो जायँगे; इतना जीवनसंग्राम, पुण्यसञ्चय, सत्पुरुषार्थ, तपस्या, साधना, इन्द्रियसंयमकी प्रबल चेष्टा, प्रियके प्रति हृदयभरा प्रेम, स्नेहपात्रके प्रति हार्दिक स्नेह, श्रद्धा भक्ति सभी पाँच भूतोंके अलग अलग होते ही हवामें ही मिल जायँगे,

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

अनन्तशून्यमें अनन्तकालके लिये लयप्राप्त हो जायँगे। इस प्रकारकी कठोर कल्पनाओंको हृदयवान् तथा बुद्धिमान् मनुष्य कभी हृदयमें स्थान नहीं दे सकते हैं। इसी कारण परलोक तथा जन्मजन्मान्तरकी नियमबद्ध शृंखलाके स्वीकार करनेमें अपनी अपनी आध्यात्मिक स्थितिके अनुसार असमर्थ होनेपर भी मुसलमान, इसाई आदि अनेक उपधर्मियोंने मरणानन्तर चिरसुखमय या चिरदुःखमय किसी प्रकारकी जीवदशाको अवश्य ही स्वीकार किया है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक पण्डित बैल्फोर्ड, स्टुआर्ट तथा पी० जी० टेट साहबने अपने प्रणीत 'अनसीन यूनिवर्स' नामक* पुस्तकमें लिखा है—"संसारके अधिकांश मनुष्य ही मृत्युके अनन्तर किसी न किसी प्रकारकी जीवित अवस्थाके विषयमें विश्वास रखते हैं तथा बहुत मनुष्य आत्माको चिर अमर कहते हैं। और यह निश्चय है कि, इस

---

* The great majority of mankind have always believed in some fashion in a life after death; many in the essential immortality of the soul. But it is certain that we find many disbelievers in such doctrines, who yet retain the nobler attributes of humanity. It may, however, be questioned whether it be possible even to imagine the great bulk of our race to have lost their belief in a future state of existence and yet to have retained the virtues of civilized and well-ordered communities.—*The Unseen Universe.*

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सिद्धान्तपर अविश्वास रखनेवाले भी अनेक मनुष्य, मनुष्यत्वके उच्च गुणोंसे युक्त होनेका दावा रखते हैं। परन्तु यह एक गहरा प्रश्न है कि, परलोक तथा जन्मान्तरपर विश्वास न रखनेपर भी हमारी जातिके अधिकांश लोग सुसभ्य तथा सुव्यवस्थित जातिके सद्गुणोंको कैसे सुरक्षित रख सकते हैं।" प्राचीन ग्रीक तथा इजिप्सियन जातिके धर्मग्रंथोंकी आलोचना करनेपर भी परलोक तथा पुनर्जन्मसम्बन्धीय सिद्धान्तकी बहुत कुछ पुष्टि होती है। दि डे आफ्टर डेथ्* नामक उनके एक ग्रंथमें लिखा है—"जीवका पुनर्जन्म नवीन सिद्धान्त नहीं है, यह सिद्धान्त जबसे जीव उत्पन्न हुआ है तभीसे है। इसका पता भारतवासी आर्य्यजातिसे ही इजिप्सियन जातिको लगा था, तदनन्तर ग्रीकजातिने इजिप्सियन जातिसे इसको पाया था और पीछेसे ड्रुईदोंने इस सिद्धान्तको स्वीकार किया था।" इस प्रकारसे गवेषणापरायण अनेक उपधर्मियोंके प्राचीन ग्रन्थोंमें परलोकवाद तथा जन्मान्तरवादकी स्वीकृतिके विषयमें यथेष्ट प्रमाण प्राप्त होते हैं। केवल अति स्थूलदृष्टिपरायण नित्यप्रत्यक्षवादी अविवेकी जन ही परलोक

---

* The re-incarnation of souls is not a new idea; it is on the contrary, an idea as old as humanity itself. It is the metampsychosis, which from the Indians passed to the Egyptians from the Egyptians to the Greeks and which was afterwards professed by the Druids.—*The Day after Death.*

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

तथा पुनर्जन्मपर विश्वास करनेमें कुण्ठित होते हैं और इसी लिये आर्य्यशास्त्रमें नास्तिकोंकी कोटिमें इनकी गणना की गई है, यथा—शिवपुराणमें—

यथेहास्ति सुखं दुःखं सुकृतैर्दुष्कृतैरपि।
तथा परत्र चास्तीति मतिरास्तिक्यमुच्यते॥

जैसा कि पुण्य-पापकर्मानुसार इस लोकमें जीवोंको सुख दुःख मिलते हैं, वैसा परलोकमें भी मिलते हैं, इस प्रकार जिसका विश्वास है, वही आस्तिक है। कैयटने भी लिखा है–

'परलोकोऽस्तीति मतिर्यस्य स आस्तिकस्तद्विपरीतो नास्तिकः'

परलोकपर जिसका विश्वास है वह आस्तिक है, और उससे विपरीत विश्वास रखने वाला नास्तिक है। इस नास्तिक्यमेघको विदूरित करके श्रीभगवान् पतञ्जलिदेवने अलौकिक योगकी सूक्ष्म संयमक्रिया द्वारा परलोक तथा जन्मान्तर विज्ञानको योगीके नेत्रके सामने पूर्णरूपसे प्रकट कर दिया है और अपने योगदर्शनके तृतीय तथा द्वितीय पादमें स्पष्टाक्षरसे कह दिया है कि—

"संस्कारसाक्षात्करणात् पूर्वजातिज्ञानम्"
"सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगः"

संस्कारपर संयम करनेसे पूर्व जन्मका ज्ञान होता है। मनुष्य इहलोकमें जो कुछ कर्म करता है उसीके तीव्र संस्कारसे

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

उसको आगामी जन्ममें भिन्न भिन्न प्रकारकी जाति, आयु तथा सुखदुःखादि भोग प्राप्त होते हैं।

इहलोक अर्थात् इस मृत्युलोकसे भिन्न सभी लोकोंको परलोक कहते हैं। इस कारण पूर्व अध्यायमें वर्णित भुवः स्वरादि कर्मानुसार प्राप्तव्य सभी ऊर्द्ध्वलोक तथा अतल वितलादि आसुरकर्मानुसार प्राप्तव्य सभी अधोलोक और असत्कर्मोंके द्वारा प्राप्तव्य दुःखमय नरकादि लोक सभी परलोक शब्दवाच्य हो सकते हैं। किन्तु इन सभोंका वर्णन जब पहले ही किया गया है, तो पुनरुक्ति न करके भूर्लोकके अन्तर्गत प्रेतलोक, नरकलोक और पितृलोक नामक जो तीन सूक्ष्मलोक विद्यमान हैं और जिनमें जीव निज कर्मानुसार सुख-दुःख भोगनेके लिये जाते हैं, उन्हींकी समीक्षा 'परलोक रहस्य' नामसे इस ग्रन्थमें की जाती है। क्योंकि उनके साथ ही जीवका निकट सम्बन्ध है। तात्पर्य यह है कि, एक ब्रह्माण्डमें मृत्युलोकसे अतिरिक्त सभी सूक्ष्मलोक यद्यपि परलोक कहलाते हैं, परन्तु साधारण तौरपर परलोक शब्दवाच्य केवल पितृलोक, नरकलोक और प्रेतलोक ही कहाते हैं, क्योंकि असत्कर्मके लिये दुःख-भोगके लोक केवल प्रेतलोक और नरकलोक हैं और साधारण सत्कार्य्यके फल-भोगके लिये पितृलोक ही यथेष्ट समझा जाता है। और बिना असाधारण बड़े बड़े कर्म किये जीव अन्य लोकोंमें नहीं जा सकता है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

परलोकके विषयमें अनेक अनुसन्धान आजकल पाश्चात्य जगत्में हो रहे हैं। जैसा कि आर्थर कोनन डायल साहबने अपने 'दि न्यू रेभेलेशन' नामक ग्रन्थकी * प्रस्तावनामें लिखा है कि, मिस पाइपार नामिका मेमने परलोकविषयिणी दृष्टिके आश्रयसे कहा था कि, यूरोपमें पहले एक बड़ा भारी युद्ध होगा और उसके बाद परलोकके आत्माओंके साथ सम्बन्ध स्थापन तथा बात चीत करनेके अनेक उपाय मनुष्योंको विदित हो जायंगे; ठीक ऐसी ही घटना आजकल यूरोप तथा अमेरिकामें देखनेमें आ रही है। कोनन डायल साहबने तो अपने ग्रंथकी प्रारम्भिक † सूचना ही इस बातपर की है कि, हम अपने परलोकगत इष्ट मित्रोंके आत्माओंके साथ निश्चय ही बात चीत कर सकते हैं। इसके सिवाय उन्होंने यह भी कहा है ‡ कि, परलोकके तथा परलोकगत आत्माओंके विषयमें

---

* In the next century this will be astonishingly perceptible to the minds of men. I will also make a statement which you will surely see verified. Before the clear revelation of spirit communication there will be a terrible war in different parts of the world.—*The New Revelation P. 12.*

† Can we or can we not speak with our beloved dead? Sir Arthur Conan Doyle answers, yes.—*The New Revelation.*

‡ Apart from personal experiences, this movement must gain great additional solidity from

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सत्य घटनाएँ जाननी हों और इस विषयमें समस्त शङ्काओंका निराकरण करना हो, तो अलिभर लजका 'रेमण्ड' नामक ग्रन्थ, अर्थार हिल साहबका 'परलोक अनुसन्धान' नामक ग्रन्थ, प्रोफेसर क्रफोर्डका 'परलोकसम्बन्धीय घटनाओंकी सत्यता' नामक ग्रन्थ, प्रोफेसर वैरेटका 'अज्ञातराज्यके समीप' नामक ग्रंथ तथा गेरल्ड वैलफोरका 'इयर आफ् डायनिसीयस' नामक ग्रन्थ, इन पाँच ग्रन्थोंका अध्ययन करना ही यथेष्ट होगा। इस प्रकारसे परलोकसम्बन्धीय चर्चाकी अवतारणा करके कोनन डायल साहबने अपने ग्रन्थमें परलोकगत आत्माओंके साथ बात चीत करनेके वहुतसे उपाय भी बताये हैं। उन्होंने * लिखा है कि,

---

the wonderful literature which has sprung up around it during the last few years. If no other spiritual books were in existence than five which have appeared in the last year or so—I allude to Professor Lodge's 'Raymond', Arthur Hill's 'Psychical Investigations,' Professor Crawford's 'Reality of Psychical Phenomena,' Professor Barret's 'Threshold of the Unseen' and Girald Balfour's 'Ear of Dionysius'—these five alone would, in my opinion, be sufficient to establish the facts for any reasonable enquirer.

—*The New Revelation Page 54.*

* It comes in the main through automatic writing where the hand of the human medium is controlled, either by an alleged dead human

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

प्रधानतः परलोकगत आत्मा किसी व्यक्तिके हाथको वशीभूत करके उसके द्वारा अपने वक्तव्य विषयोंको लिखाते हैं। और अनेक समय मुग्धवाणी वशीभूत व्यक्ति द्वारा उच्चारित वाणी और कहीं कहीं प्रत्यक्ष वाणी द्वारा भी परलोकके सवाद जाने जाते हैं। पीठासन, दो चार व्यक्तियोंके सर्कल, बालकों-के हाथ आदिके द्वारा भी यह कार्य कभी कभी हो सकता है। इन बातोंपर यदि कोई अविश्वास करें और यह शंका करें कि, ऐसी बातें या तो जाग्रत अवस्थामें या किसी प्रकारकी मुग्ध अवस्थामें उक्त पात्र (medium) के द्वारा या उसके उन्नत आत्माके द्वारा लिखी जाती हैं, तो इसके उत्तरमें डायल साहब लिखते हैं कि, जब मिस जुलिया एमेस

---

being, as in the case of Miss Julia Ames or by an alleged higher teacher, as in that of Mr. Stainton Moses. These written communications are supplemented by a vast number of trance utterances and by the verbal messages of spirits, given through the lips of mediums. Sometimes it has even come by direct voices, as in the numerous cases detailed by Admiral Usborne Moore in his book "The Voices." Occasionally it has come through the family circle and table-tilting as for example in the two cases I have previously detailed within my own experience. Sometimes as in a case recorded by Mrs. De Morgan, it has come through the hand of a child.—*The New Revelation, pages 61-62.*

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ष्टेड साहबको ऐसी बातें कहती हैं, जिनका पता तक उनको नहीं था और पीछेसे अनुसन्धान करनेपर वे सब सत्य निकली या जब रेमण्डका आत्मा ऐसी फोटोकी बात कहता है जिसकी कोई भी कापी इङ्गलेण्डमें नहीं थी और पीछेसे वह सब सत्य प्रमाणित हुआ या जब उसने किसी अनजान व्यक्तिके द्वारा अपने घरकी सब बात कही जो परीक्षा करनेपर सत्य प्रमाणित हुई, या जब अर्थर हिल साहब ऐसे व्यक्तिके द्वारा परलोकका संवाद पाते हैं, जिसके विषयमें उनको कुछ भी ज्ञात न था, किन्तु पश्चात् ये सब विषय ठीक प्रमाणित होते हैं, तो इस प्रकार परलोक सम्बन्धीय बातोंपर कोई भी शंका नहीं रह सकती है और पूर्ण विश्वास किया जा सकता है। *

---

* Again, if Miss Julia Ames can tell Mr. Stead things in her own earth life of which he could not have cognisance and if those things are shown, when tested, to be true, then one is more inclined to think that those things which cannot be tested are true also. Or once again, if Raymond can tell us of a photograph no copy of which had reached England and which proved to be exactly as he described it and if he can give us, through the lips of strangers all sorts of details of his home life, which his own relatives had to verify before they found them to be true, is it unreasonable to suppose that he is fairly accurate in his description of his own experiences and state of life at the very moment

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ऊपर कथित विषयोंकी सत्यताके प्रमाणरूपसे पाश्चात्य जगत्‌में अनेक घटनाओंका संग्रह हो रहा है, जिनके द्वारा स्पष्ट सिद्ध हो रहा है कि, परलोकगत आत्मा इहलोकके जीवोंके साथ नाना प्रकारसे बात चीत करते हैं तथा आत्मीय जनोंके साथ मृत्युके बाद मिलने भी आते हैं। सर अलिभर लाजके पुत्र रेमण्ड गत यूरोपीयन युद्धमें मृत्युके बाद उनके मातापिता तथा कुटुम्बियोंके साथ किस प्रकारसे बात चीत करते थे, इसका पूरा वृत्तान्त अलिभर लजकृत 'रेमण्ड' नामक ग्रन्थमें दिया गया है, जिससे परलोकके विषयमें पूर्ण विश्वासके साथ सर अलिभर लज साहबने अपने ग्रंथमें * लिखा है—"मैंने तथा कुछ और लोगोंने क्रमशः

---

at which he is communicating? Or when Mr. Arthur Hill receives messages from folk of whom he never heard and afterwards verifies that they are true in every detail, is it not a fair inference that they are speaking truths also when they give any light upon their present condition?—*The New Revelation, page-64-65*.

* There is no real breach of continuity between the dead and the living ...... I and some others have been gradually convinced. My son has given me convincing evidence, moreover he wants me to speak out and I shall. I am as convinced of continued existence on the other side of death, as I am of existence here .... I shall go further and say I am reasonably convinced of

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

यह, यथार्थ ज्ञान पाया है कि, मृत तथा जीवित जीवोंके बीचमें वास्तविक कोई पार्थक्यजनक अन्तर नहीं है। मेरे पुत्रके द्वारा मुझे इस विषयमें विश्वासयोग्य प्रमाण प्राप्त हुए हैं और उसकी इच्छा है कि, मैं इस विषयका ज्ञान संसारमें भी प्रकट करूँ और इस लिये मैं अपना अनुभव जगत्के सम्मुख अवश्य रक्खूँगा। मैं मरणानन्तर जीवनके विषयमें उतना ही विश्वास रखता हूँ, जितना मरणसे पूर्व जीवनके विषयमें मेरा विश्वास है। केवल इतना ही नहीं अधिकन्तु मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि, मनुष्यलोकके नीचे तथा मनुष्यलोकके ऊपर ऐसे अनेक लोक हैं, जिनमें अनेक प्रकारके उच्च तथा नीच कोटिके जीव निवास करते हैं।" परलोकगत आत्मा किस प्रकारसे बात चीत करते हैं, इस विषयमें अर्थर हिलके मैन ईज ए स्पिरिट नामक पुस्तकमें एक घटना बताई गई है। उसमें कैप्टेन जेम्स वर्टनने * लिखा है—"मेरे पिताकी

---

the existence of granes of being not only lower in the scale than man but higher also, grades of every order of magnitude from zero to infinity.—*Raymond or Life and Death by Sir Oliver Lodge.*

* A week after my father's funeral I was writing a business letter, when something seemed to intervene between my hand and the motor centres of my brain and the hand wrote at an amazing rate a letter, signed with my father's signature and purporting to come from him.

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मृत्युके एक सप्ताह बाद मैं एक पत्र लिख रहा था, इतनेमें मुझे जान पड़ा कि, मेरे हाथ और मस्तिष्कके बीचमें कोई तीसरी चीज़ आ रही है और उसी समय मेरे हाथके द्वारा बड़ी शीघ्रताके साथ एक पत्र लिखा गया जिसमें मेरे मृत-पिताका हस्ताक्षर था। एक वर्षके बाद ऐसे अनेक पत्र मेरे पिताने मेरे हाथके द्वारा प्रकट किये, जिनके अक्षर बहुत छोटे छोटे थे और विषय भी मुझसे ठीक ठीक समझे नहीं गये। मैं जहाँ रहता था, उससे ६० मील दूरपर मेरी

For a year after this letters came frequently and always at unexpected times. I never knew what they contained until I examined them with a magnifying glass. They were microscopic. And they contained a vast amount of matter with which it was impossible for me to be acquainted.

Unknown to me, my mother, who was staying some sixty miles away, lost her pet dog which my father had given her. The same night I had a letter from him condoling with her and stating that the dog was now with him. 'All things which love us and are necessary to our happiness in the world are with us here. A most sacred secret known to no one but my father and mother, concerning a matter which occurred years before I was born, was afterwards told me in the script with the comment:—'Tell your mother this and she will know, that it is I, your father, who am writing.'—*The New Revelation*, *Page 156-157.*

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

माता रहती थीं। उनके पास मेरे पिताका दिया हुआ जो एक कुत्ता था, वह अचानक मर गया। उसी रातको मेरे पिताने मुझे लिख दिया कि, मेरी माता दुःख न करें क्योंकि वह कुत्ता अब पिताके पास है। जिन वस्तुओंसे उनको आनन्द मिलते हैं, वे उनके पास रहा करते हैं। एक अति गुप्त विषय जो मुझे मालूम नहीं था, केवल मेरे पिता और माताको ही मालूम था, वह भी एक दिन पिताने मेरे हाथसे लिखवाया और यह भी लिखा कि 'तुम अपनी मातासे यह गुप्त विषय कह दो जिससे उसे मालूम पड़े कि, मैं ही लिख रहा हूं," इस प्रकारसे परलोकगत आत्माके दर्शनके विषयमें भी कई एक प्रमाण पश्चिमदेशीय लोगोंको प्राप्त हुए हैं। सर अलिभर लज साहबने स्वप्रणीत सरह्वैवल आफ् मैन नामक ग्रंथमें ऐसी ही एक घटनाका वर्णन किया है। यह घटना मिस पैकेट साहेबाके विषयमें डाकृर हड्सन् साहबने बताई है। उसमें यह * लिखा है कि, मिस

---

* Mrs. Paquet on the morning of October 24th, 1889, after her husband had gone to work, was making some tea for herself when she saw a vision of her brother, Edmund Dunn, standing only a few feet away and her report continues :—

The apparition stood with back toward me or rather partially so and was in the act of falling forward-away from me. The vision lasted but a moment disappearing over a low railing,

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

पैकेट १८८६ सालके २४ अक्टूबरको प्रातःकाल चा बना रही थी, इतने उन्होंने उनके भ्राता एड्मएडकी मूर्तिको देखा। वह समुद्रमें डूब रहा था। थोड़ी देर बाद उनके पतिको तार मिला कि, एड्मएड डूब कर मर गया है और ठीक उसी समय मरा है, जिस समय उसकी भगिनी पैकेट साहेबाको उसकी मूर्त्ति देख पड़ी थी। इस घटनासे मृतपुरुष-की आत्मा दिखाई दे सकती है, यह बात सिद्ध होती है।

परलोकगत आत्माके साथ नाना प्रकारसे बातचीत करके पश्चिम देशीय लोग आजकल पितृलोक, प्रेतलोक आदिके

---

but was very distinct. I dropped the tea, clasped my hands to my face and exclaimed, 'My God! Edmund is drowned.'

At about halfpast ten A. M. my husband received a telegram from Chicago announcing the drowning of my brother. When he arrived home, he said to me 'Edmund is sick in hospital at Chicago' to which I replied 'Edmund is drowned, I saw him go overboard.'—*Statement of accident.*

On October 24th, 1889, Edmund Dunn, brother of Mrs. Agnes Paquel, was serving as fireman on the tug Wolf, a small steamer engaged in towing vessels in Chicago harbour. At about 3 o'clock A. M. the tug fastened to a vessel, inside the piers to tow her up the river. While adjusting the tow-line Mr. Dunn fell or was thrown overboard by the tow-line and drowned.—*The Survival of Man pages 81-82*

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

विषयमें बहुत कुछ अपूर्व संवाद प्राप्त कर रहे हैं। रेमएडके आत्माके साथ बात करके जो कुछ संवाद विदित हुए थे, उसका पूरा वृत्तान्त सर अलिभर लज़ने * रेमएड नामक ग्रन्थमें उद्धृत कर दिया है। नीचे उसमेंसे कुछ विषय दिये जाते हैं।

---

* "He lives in a house, built of bricks—there are trees and flowers, night does not follow the day here. There is something rising from earth-planes through various changes and solidifies on our plane. My body is very similar to the one I had before. I pinch myself sometimes to see if it is real, it is, but it does not seem to hurt as much as when I pierced the fleshy body. The internal organs do not seem constituted on the same lines as before. I can move somewhat more freely. Oh! there is one thing, I have never seen anybody bleed. I have got eyes etc. I saw a man who had lost his arm in war but he has got another one. There are spirit doctors on our side.

"They saw the spirit had not got out of the body. They magnetised it and helped it out. I do not want to eat now. I see some who do; they have to be given something which has all the appearance of earth-food. There are men here and there are women here. I don't think they stand to each other quite the same as they did on the earth plane but they seem to have the same feeling to each other, with a different expression

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

"रेमएड एक मकानमें रहते हैं जो ईंटकासा बना हुआ प्रतीत होता है, वहाँपर वृक्ष तथा पुष्प भी है। वहाँ दिनके बाद रात नहीं होती है। पृथिवीसे कुछ सूक्ष्म वस्तु ऊपरको जाती है, जो वहाँ पहुँच कर गाढ़ी हो जाती है और उससे मकानात बनते हैं। उनका शरीर जीवितावस्थाके जैसे है। किन्तु स्थूलशरीर जैसी चोट इसमें मालूम नहीं पड़ती है। शरीरके भीतरके यन्त्रसमूह पहलेकी तरह बने हुए नही हैं। पहलेकी अपेक्षा स्वतन्त्रता तथा शीघ्रताके साथ वे घूम सकते हैं, यहांके शरीरसे रक्त कभी नहीं निकलता है। उनको आँख आदि मिली है, युद्धमें एक मनुष्यका हाथ कट गया था, उसको एक नया हाथ मिला है। वहाँपर डाक्टर लोग भी रहते है। उन्होंने ऐसा एक आत्मा देखा है जिसका स्थूलशरीर अलग नहीं हो रहा था, किन्तु यहांके डाक्टरोंने उसे अलग कर दिया। यहां उनको खानेकी इच्छा नहीं होती है। कोई कोई लोग खाते भी हैं। उनका

---

of it. There don't seem to be any children born here. But there is a feeling of love between men and women here which is of a different quality. I see stars, the sun; he does not feel heat or cold where he is, the reason is not the sun has lost its heat, but he has not the same body that sensed it, when he comes into contact with the earth plane he feels heat or cold."

Raymond pages 184-200.

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

खाना मर्त्यलोकके खानेकी तरह ही है। वहांपर स्त्री पुरुष दोनों ही रहते हैं। किन्तु मर्त्यलोककी तरह वहांपर दोनोंका सम्बन्ध नहीं है। वहांपर किसीको सन्तान उत्पन्न नहीं होती है। उनके प्रेम भी और तरहके मालूम होते हैं। वे सूर्य नक्षत्र आदिको देखते हैं। किन्तु उत्ताप या शीत कुछ भी वहां-पर प्रतीत नहीं होता है। इसका यह कारण नहीं है कि, सूर्यमें उत्ताप नहीं रहा, किन्तु उनका ही वह शरीर बदल गया है, जिसमें शीत ग्रीष्म प्रतीत होता था।" इत्यादि। इस प्रकारसे सर आर्थर कोनन डायलको भी परलोकगत आत्माके द्वारा बहुतसी अपूर्व बातें अनुभवमें आगई हैं, जिनको उन्होंने 'दी न्यू रेभेलेशन' नामक ग्रन्थमें प्रकाशित किया है। यहां उनमेंसे कुछ बातें दी जाती हैं। "पर-लोकगत आत्माओंका निवासस्थान इस मृत्युलोककी चारों ओर ही सूक्ष्मरूपसे है। उनको ग्रह नक्षत्रोंके विषयमें ज्ञान रहता है। वे जानते हैं कि, मङ्गल ग्रहमें पृथिवीलोकसे उत्तमकोटिके जीव बसते हैं। परलोकमें शारीरिक कष्ट नहीं है, मानसिक क्लेश या उद्वेग वहाँपर हो सकते हैं, वहाँके आत्माओंपर शासक भी रहते हैं। वहाँ आनन्द तथा सङ्गीतकी चर्चा अधिक होती रहती है। वह प्रकाश तथा हास्यविलासमय स्थान है। वहाँपर धनी या निर्धन कोई नहींहै, किन्तु साधारणरूपसे सभी मृत्युलोकसे अधिक सुखी रहते हैं। जो लोग मृत्युलोकमें उपासनादि करते हैं, उनको

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

वहाँपर अच्छी स्थिति मिलती है। मृत्युलोककी अपेक्षा अनेक सूक्ष्मतर बातें वहाँपर अनुभवमें आने लगती हैं। स्थूल-शरीर त्याग होते ही जीव देखता है कि, ठीक उसीके अनुरूप उससे सूक्ष्म एक शरीर उसे मिल गया है, किन्तु उसमें रोग, शोक, अङ्गवैकल्य आदि नहीं है। यह नूतन देह पूर्वदेहके पास ही है और अपनेको तथा पूर्वदेह और कुटुम्बियोंको भी वह देख रहा है। इस समय मृत आत्मा पूर्व-शरीरके बहुतही पास रहता है और इसी कारण चिन्ताके अनुसार अन्यान्य कुटुम्बियोंको दिखाई भी दे सकता है। इस समय प्रयत्न करनेपर उसकी बात या स्पर्श स्थूलशरीर धारी कुटुम्बियोंको ज्ञान नहीं पड़ता है। क्योंकि स्थूल-शरीरके यन्त्र आदि उस आत्माके सूक्ष्म विषयोंके ग्रहणमें असमर्थ होते हैं। वह यह भी देखता है कि, उस घरमें और भी अनेक आत्मा हैं, जो पहले इहलोकको छोड़ चुके हैं, अब वे उसको प्रेमसे बुला रहे हैं, आलिंगन कर रहे हैं और अब वह उनके तथा और कुछ उज्ज्वलशरीर आत्माओंके द्वारा चालित होकर स्थूल वस्तुओंको भेद करके शून्यमें जा रहा है। उसके लिये स्थूल वस्तु स्थानावरोध नहीं कर सकती हैं। स्थूलशरीर छोड़कर नवीन जीवन प्राप्त करनेसे पहले कुछ देर तक आत्माको मूर्च्छा, निद्रा तथा दुर्बलता रहती है। पीछेसे धीरे धीरे बल आ जाता है। इस लोकके सभी जीव परलोकमें एक साथ नहीं रह सकते हैं। किन्तु

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

जिनके परस्परमें प्रेम सम्बन्ध रहता है वे प्रायः एक साथ रहते हैं *।" इत्यादि इत्यादि अनेक विषय डायल साहबने लिखे हैं। आलेन करडेक साहबकी "स्वर्ग और नरक" नामक पुस्तकमें एक अपूर्व घटना मिलती है। उसमें लिखा है कि, फ्राँस देशकी राज धानी पेरी नगरमें एक स्पीरी च्युअलीज्म विद्याकी सभा थी; उसमें उस नगरके बहुत बड़े बड़े मनुष्य सभ्य थे। जिनमेंसे गाँसन साहबके नामसे इस सभामें एक प्रतिष्ठित सभ्य समझे जाते थे। उनकी मृत्यु होनेके एक वर्ष पूर्व वे पीड़ित हुए, और उस पीड़ामें उन्होंने नाना क्लेश पाया। शरीर त्याग करते समय उन्होंने इस सभाके सभापतिको एक पत्र लिखा कि,—"मेरे देहान्तर-प्राप्तिके अनन्तर ही मेरी आत्माको आप लोग अवश्य बुलाइयेगा, और किस किस रूपसे आत्मा शरीरको त्याग करता है और उस समय जो जो अनुभव होता है, उस विषयमें आप लोग मेरी आत्मासे विशेष प्रश्न करियेगा, तो मैं अवश्य ही उस सूक्ष्म शरीरमें आप लोगोंको इस आध्यात्मिक ज्ञानका विस्तारित विवरण ज्ञात करूँगा"। सन् १८६२ ईस्वीकी तारीख २१ अप्रेलको इस साहबके परलोकगमनके थोड़ी देरके अनन्तर ही उस स्थानमें जाकर मृतशरीरके पास ही सभा अर्थात् चक्र करके सभ्यगण बैठे और नियमित ईश्वर उपासनाके पश्चात् उनकी आत्माका आवाहन किया गया।

**The New Revelation pages 31--97.*

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

इस चक्रमें बहुत शीघ्र ही मृतपुरुषकी आत्मा आगई तब प्रश्न और उत्तर होने लगे।

प्रश्न—प्यारे भाई! तुम्हारी इच्छाके अनुसार इस समय हम लोगोंने तुमको बुलाया है।

उत्तर—भगवान्की स्तुति करो, उन्हींकी कृपासे मैं तुम्हारे समीप इस समय आ सका हूँ। किन्तु मैं बड़ा ही दुर्बल हूं, थर थर कांप रहा हूं।

प्रश्न—परलोकगमन करनेके पूर्व तुमको यहाँ बड़ा ही कष्ट हुआ था, इस समय भी क्या तुमको वे सब कष्ट अनुभव होते हैं? दो दिन पहिलेकी अवस्थासे आजकी अवस्था मिलाकर कहो तो कि, तुमको कैसा अनुभव होता है?

उत्तर—पहिले जितने कष्ट थे वे सब इस समय कुछ नहीं है। इस समय बड़ा सुख अनुभव होता है। मेरा शरीर नूतन बन गया है। जन्म ही नूतन अनुभव होता है। मृत्तिकाके शरीरसे आत्मा किस प्रकारसे निकली सो मैं पहिले कुछ नहीं समझ सका। उस समय बहुतसी आत्मायें अज्ञान अवस्थामें रहती हैं, किन्तु मरनेके पूर्व मैंने और मेरे प्रिय लोगोंने भगवान्की प्रार्थना की थी कि, मरनेके पश्चात् मुझको बातचीत करनेकी शक्ति बनी रहे और श्रीभगवान् ही की कृपासे मुझमें वह शक्ति इस समय है।

प्रश्न—मरनेसे कितने समय पश्चात् आपको ज्ञान प्राप्त हुआ था?

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

उत्तर—प्रायः आधा घण्टा। इस लिये भी मैं भगवान्‌का गुणानुवाद करता हूं।

प्रश्न—आप किस प्रकारसे जानते हैं कि, आप इस पृथिवीसे वहाँ गये हैं ?

उत्तर—इस विषयमें मुझे कुछ भी सन्देह नहीं है। जब मैं पृथिवीमें रहता था, तब अपनी आयु सदा परोपकारमें व्यतीत करता था। इस समय आत्मभूमिमें रहकर सत्यानुसंधानका प्रचार करनेके लिये आध्यात्मिक विज्ञान शास्त्र मनुष्योंमें प्रचारित करूँगा। मैं अच्छा था, इस कारण अब इस समय सबल हुआ हूं-मानों नूतन कलेवर मिल गया है। यदिच मुझे इस समय आप देखेंगे, तो पुनः उस गाल बैठे दाँत गिरे बूढ़ेका मनन भूल जायँगे; क्योंकि अब मैं पूर्ण नव-युवक बन गया हूँ। इस आत्मभूमिमें पूर्व माँसका लोथड़ा बन देहधारण किये हुए बिचरना नहीं पड़ता; यहाँका शरीर अति सूक्ष्म है। यह असीम विश्वजगत् मेरा गृह है; और उसी विश्वपिताके समान सम्पूर्ण होकर मेरा भविष्यत् भाग्य है। मुझको अपनी सन्तानोंसे वार्तालाप करनेकी इच्छा होती है, कदाचित् वे मेरी यह अवस्था देखकर अपना विश्वास परिवर्तन कर सकें।

प्रश्न—तुमको अपना यह मृत देह देखकर मनमें कैसा भाव होता है ?

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

उत्तर—अहा! शरीर तो मृत्तिका ही हो जायगा, किन्तु इसके द्वारा मैं आप लोगोंसे परिचित था। मेरी आत्माका वासस्थान इस शीररने मेरी आत्माको पवित्र करनेके लिये कितने दिनों पर्यन्त कैसा कैसा कष्ट सहा है! देह! तुम्हारी ही कृपासे मुझे आज यह सुख मिल रहा है!

प्रश्न—आपको क्या मरनेके समय तक ज्ञान था? तब आपके मनका भाव कैसा था?

उत्तर—हाँ था—उस समयमें चर्म चक्षुके द्वारा नहीं देख सकता था, परन्तु ज्ञान चक्षुके द्वारा सब कुछ देखता था। पृथिवीके सब काम मनमें उदय होने लगे। ठीक शरीरसे पृथक् होते समय आत्मा दृष्टिहीन होगया; पुनः अनुभव होने लगा कि, किसी अनजान शून्याकार आकारको धारण करके मैं चल रहा हूं। पुनः थोड़ी देरमें एक अद्भुत आनन्दमय स्थानमें पहुंच गया; वहाँ सब दुःख भूल गया और तब मैं एक अपार आनन्दसागरमें मग्न होने लगा।

प्रश्न—आप क्या जानते हैं—(सम्पूर्ण बात मुखसे बाहर भी नहीं हुई थी कि, उत्तर लिखा जाना आरम्भ हो गया।)

उत्तर—जो लिखते हो सो अवश्य अवश्य होगा। श्मशान भूमि और मृतकशरीर देखकर लोगोंको परकालकी स्मृति और नास्तिकोंके मनमें भय उत्पन्न हुआ करता है, इस लिये धर्मसम्बन्धमें मेरी जो कुछ सम्मति है, उसे सब लोगोंपर

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

विदित कर दो, क्योंकि इससे बहुतसा उपकार मनुष्य समाजको पहुंचेगा ।

पुनः जब मृतकशरीर पृथिवीके नीचे रक्खा जाने लगा तब चक्रमें लिखा कि—"हे भाइयो ! मृत्युसे भय कदापि मत करो। पृथिवीके सब दुःखोंमें धैर्य्य अवलम्बनपूर्वक सत्यपथमें सब समय विचरण करनेका यत्न करो, तब असीम सुखको अपने सामने देखोगे। हे बन्धुगण ! सदा सत्यके प्रचारमें प्रवृत्त रहो; इस विषयको सदा मनमें रखना उचित है कि, पृथिवीमें वेही लोग सुखसे चारों ओर वेष्टित हो सकते हैं कि, जो और लोगोंको सुखसे वञ्चित न करते हों; सो इस कारण यदि सच्चे सुख और पूर्ण सुखके पानेकी इच्छा हो तो दूसरोंको सुखी करो"। तत्पश्चात् उस दिन पैरी नगरकी उस सभाने अपना कार्य्य बन्द किया; और पुनः उसी सन्के और उसी महीनेके पचीसवीं तारीखको पुनः अपनी सभाका अधिवेशन किया, और तब चक्रमें उन्हीं साहबकी आत्मा पुनः आनेपर प्रश्न और उत्तर होने लगा ।

प्रश्न—मरनेके समय क्या बड़ा कष्ट होता है ?

उत्तर—जरूर कष्ट होता है। पृथिवीमें रहनेका समय केवल दुःखका समय है, और मृत्यु उसी दुःखकी पूर्णाहुति है। आत्मा शरीरसे अलग होनेके पहिले, सम्पूर्ण देहसे तेज खींच लेता है। इसीको सब लोग मरनेका कष्ट कहते हैं, इस खिंचावमें आत्मा अचेत हो जाता है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

प्रश्न—अच्छा, शरीरसे अलग होनेके कुछ पहिले आपकी आत्मा आत्मभूमिको देख सकी थी?

उत्तर—इस प्रश्नका उत्तर पहिले ही दे चुका हूँ। मैंने वहाँ पहुंचकर अपने आत्मीय सम्बन्धियोंको देखा। उन लोगोंने बड़े आनन्दके साथ मेरा स्वागत किया। शरीरके नीरोग और बलवान् हो जानेमें आनन्दके साथ शून्य स्थानमें मैं चलने लगा। मैंने जिन जिन पथमें पदार्थोंको देखा उनकी आश्चर्यसुन्दरता वर्णन करनेके योग्य शब्द ही संसारमें नहीं है; केवल यह ही समझ लेना उचित है कि, तुम लोग पृथिवीमें जिन पदार्थोंको सुख कहा करते हो वह केवल उपन्यास मात्र है। तुम लोगोंके बड़े कवियोंकी कल्पना भी वहाँके सुखकी एक छोटेसे छोटे अंश वर्णना करनेको समर्थ नहीं हो सकती।

प्रश्न—परलोकगामी आत्मा सब देखनेमें कैसे होते हैं? उन लोगोंके भी क्या मनुष्यके नाइ हाथ पाव आँख मुँह आदि हुआ करते हैं?

उत्तर—हां वैसे ही होते हैं, वेभी ठीक मनुष्यके नाईं आकारविशिष्ट हुआ करते हैं। केवल भेद इतना ही है कि, मनुष्योंका शरीर बहुत मोटा और भद्दा हुआ करता है तथा बुढ़ापेसे अथवा शोकके दुःखसे जीर्ण हो जाता है; परन्तु परलोकगामी आत्माओंका शरीर बहुत सूक्ष्म और अति सुन्दर होता है। वे अति अल्पचेष्टासे ही चल फिर सकते हैं और

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

जरा आदिसे उनके शरीरमें कोई भी विघ्न नहीं पड़ता। हम लोग अपनी इच्छाके अनुसार जहां चाहें वहीं रह सकते हैं; यह देखो इस समय मैं तुम्हारे पास ही हूँ, और तुम्हारे हाथ पर हाथ रक्खे हूं, परन्तु तो भी तुम कुछ भी अनुभव करनेको समर्थ नहीं हो। हम लोगोंकी आंखें सब द्रव्योंके भीतर और बाहरके सब पदार्थोंको देख सक्ती हैं।

प्रश्न–आप लोग किसीके मनकी बात कैसे जान सकते हैं?

उत्तर—यह कारण तुम लोग शीघ्र नहीं समझ सकोगे। धीरज धारण करके संसारमें धर्म करो तब सब कुछ आपही आप समझ जाओगे। तुम लोगोंके मनकी चिन्ता चारों ओरके आकाशमें अङ्कित हो जाती है, और उन्हीं चिन्ताओंको परलोकगामी आत्मागण पढ़ सकते हैं।

इस प्रकारसे स्पीरीच्युअलीज्म सभामें वैज्ञानिक चक्र द्वारा परलोकगामी आत्माओंसे कथोपकथन करके यूरोप और अमेरिकाके अनेक विद्वान्‌गण आध्यात्मिकजगत्‌के अनेक सम्बाद विदित कर पुस्तकाकार प्रकाशित कर चुके हैं। ऐसे लोगोंमेंसे अमेरिकादेशवासी जौन डबलू एडमण्ड्स (John W. Edmonds.) साहबके नामसे एक प्रतिष्ठित पुरुष थे; वे वहांके अदालतके एक बड़े और मानी जज थे, और जिनके वाक्यपर समस्त अमेरिकावासियोंका विश्वास है। यह साहब प्रथम पाश्चात्य ज्ञान-शैलीके अनुसार इन विषयोंको कुछ भी नहीं मानते थे, परन्तु सत्य अनुसंधान

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

करनेमें दृढ़व्रत थे, इस कारण न माननेपर भी क्रमशः सत्य घटनाओंको देखते देखते उनका विश्वास परलोक विषयक स्पीरीच्युअलीज्म शास्त्रपर जम गया, और शेषमें वे एक इस शास्त्रके प्रधान आचार्य्य बन गये। उन्होंने अपना पूर्व अन्ध विश्वास और पश्चात्के ज्ञानपूर्ण अनुसन्धान समूहोंको विस्तारसे सन् १८५३ ईस्वीमें छपी हुई "स्पीरीच्युअलीज्म" नामक पुस्तकमें लिखा है। साहबने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि, "जब मेरा विश्वास इस विद्यापर हो गया और मैं अपने ही ज्ञान द्वारा अनुसन्धान करने लगा तो मुझे इन निम्नलिखित सात विषयोंपर विश्वास दृढ़ करना पड़ा।

(१) इस पृथिवीपर आयु समाप्त करनेके अनन्तर मनुष्यके आत्माकी स्थिति रहती है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। बहुतसे सच्चे धार्मिक मनुष्योंको इस पारलौकिक विषयमें खोज करते देखा; परन्तु अवशेषमें उनको अपने इसी सिद्धान्तपर स्थिर होते देखा गया है।

(२) जिन लोगोंको हम पृथिवीपर प्यार करते हैं उन लोगोंसे हम लोगोंकी स्वतन्त्रता मृत्युके द्वारा नहीं हो सकती। हमारे प्रियजन परलोक गमनके अनन्तर हम लोगोंके साथ सूक्ष्म शरीरमें रह कर हमारी रक्षा कर सकते हैं। तत्-पश्चात् यदि हम लोग धर्म पथ पर चलें तो हमारे परलोक-गमन होनेपर उनसे मेल हो सकता है, अथवा कदाचित् यहीं मेल हो सकता है। यदि केवल मैं ही मेरे प्रियजनोंसे

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मिलता तो ऐसी बात नहीं लिख सकता। किन्तु जितने लोग हमारे साथ चक्रमें बैठा करते थे प्रायः वे सब ही अपने प्रियजनोंसे मिले हैं, इस कारण हमारा विश्वास अकाट्य है।

(३) यह भी सिद्ध हो चुका है कि, हम लोगोंके मनके बहुत शुभ सम्वाद परलोकगामी आत्माओंको विदित हो सकते हैं और उनको वे प्रकाशित भी कर सकते हैं। इसका प्रमाण इस शास्त्रके अभ्यासकर्त्तामात्रको अवश्य ही मिला करता है।

(४) परलोकगामी आत्माओंमें अवस्थाभेद है, और परलोकमें भी निकृष्टता और उत्कृष्टता है। अपने कर्मोंके अनुसार परलोकगामी जीवगण उत्कृष्ट और निकृष्ट दशाको प्राप्त हुआ करते हैं।

(५) यह बात सिद्ध ही है कि, हम जैसा कर्म्म करेंगे ठीक वैसा ही फल हम लोगोंको परलोकमें मिलेगा। हमारे परजन्ममें सुख और दुःखकी प्राप्ति हमारे हाथ ही है। इस कारण हमलोगोंको सदा सत्कर्म्मका अनुष्ठान करना उचित है और भविष्यत्के लिये ईश्वरकृपा और अपने कर्मोंपर निर्भर करना उचित है।

(६) मुझको यह भी इस शास्त्रकी चर्चासे प्रमाण मिला है कि, मनुष्यकी क्रमोन्नतिका पथ इस एक जन्मके साथ नष्ट नहीं हो जाता और जन्मान्तरमें जीव क्रमशः अपनी आत्मोन्नति कर सकता है। और शेषमें यदि ठीक पथ पर चला

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

हो वह जहांसे निकला है वहीं पहुंचकर आनन्दकी परा-काष्ठाको प्राप्त हो जायगा ।

(७) और अन्तिम बात मैंने यह सीखी है कि, मृत्युके अनन्तर मनुष्य किसी न किसी योनिको अवश्य प्राप्त हो जाता है और तब उसको अपने पूर्व साथियोंसे संस्कारके अनुसार मनका कुछ सम्बन्ध भी रहा करता है।

इन सातों बातोंपर मेरा दृढ़ और अभ्रान्त विश्वास हो गया है; और विश्वास है कि, सच्चे उद्योगसे जो मनुष्य इस शास्त्रको अध्ययन करेंगे वे भी इसका भली भांति प्रमाण पावेंगे ।

साहबके उस पुस्तकमें लिखा है कि, तारीख ८ अप्रैल सन् १८५३ ईस्वीमें एक चक्र बैठाया गया जिसमें वहांके बड़े बड़े प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे। चक्र बैठनेके थोड़ी देर पीछे अनुभव हुआ कि चक्रमें कोई आत्मा आया है; जिज्ञासा करनेके अनन्तर लेख द्वारा उत्तर दिया जाने लगा कि मेरा नाम "बेकन" है। (यह बेकन साहब विलायतके एक बड़े भारी राजनैतिक और दार्शनिक विद्वान् थे।) पुनः लिखा गया कि "परलोकके विषयमें पूर्ण ज्ञान बहुत कम लोगोंको विदित है, और उस विषयमें जितनी बातें प्रगट हुई हैं वे सब पूर्णरूपसे सच्ची नहीं हैं; क्योंकि परलोकगामी आत्मागण जिस लोकमें स्वयं रहते हैं उसके बाहरकी बात कुछ नहीं जान सकते हैं। मनुष्यका देहपात होनेके अनन्तर वह उस

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

लोकमें जा सकता है जिस लोकके आनेका वह अधिकारी हुआ करता है, मनुष्यको इस लोकमें जितनी ज्ञानकी उन्नति हुई है, उसमें जैसे अभ्यासोंकी दृढ़ता हुई है, उसी प्रकारकी शक्ति उसमें रहनेके कारण उसको देहपातके अनन्तर तद्-नुरूप लोककी प्राप्ति हुआ करती है। यद्दिच ईश्वर सर्व-व्यापक है तथापि उसकी महिमा क्रमशः उत्कृष्ट लोकोंमें अधिक प्रकाशको प्राप्त हुई है; इस कारण जीव जितना अधिक धार्म्मिक होता है उतना ही वह उच्चतर लोकमें पहुचकर ईश्वरके निकटवर्त्ती हो सकता है। अच्छा और पवित्र आत्मा पृथिवीसे बहुत ही दूरवर्त्ती लोकोंमें रहा करता है। परन्तु जो आत्मा जिस लोकमें जाता है वह उसी लोकका उपयोगी हो जाता है; उन्नत लोककी आत्मा अधोलोकका सम्वाद कदाचित् जान सकें, परन्तु अधोलोककी आत्मायें उन्नत लोकका सम्वाद नहीं जान सकतीं।

प्रश्न—परलोकगामी आत्माका स्थान निश्चय होते समय उनके स्वभावके साथ स्थानके स्वभावका कुछ विचार रक्खा जाता है। या नहीं ?

उत्तर—अवश्य विचार रक्खा जाता है। जैसे आत्मा-ओंका जन्म इस पृथिवीपर हुआ करता है वैसे ही अन्य ग्रह और उपग्रहोंमें भी हुआ करता है; और जहांके उपयोगी जो आत्मा होते हैं केवल उसी लोकमें ही वे जन्म ले सके हैं।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

प्रश्न—जो मनुष्य इस प्रकारसे हमारे पृथिवीसे मर कर अन्य ग्रहोंमें चले जाते हैं वे क्या वहां जाकर वहांके जीवधारियोंके समान जन्म लिया करते हैं; यहांकी सी शैली क्या वहां भी है?

उत्तर—जब कोई उन्नत आत्मा वहां मृत्युको प्राप्त हो जाता है, तो वह अपनी उन्नतिके अनुसार क्रमशः फिरता हुआ अपने ही उपयोगी लोकको पहुंच जाता है; सूक्ष्म शरीरको एक लोकसे दूसरे लोकमें पहुंचते हुए कुछ विलम्ब नहीं लगता। जब यह आत्मा अपने निवास उपयोगी स्थानमें पहुंच जाता है, तब वह वहांके निवासियोंकेसे देहको प्राप्त कर लेता है; नाना लोकोंके नाना अवस्थाके अनुसार नाना प्रकारके देह हुआ करते हैं। बहुतसे लोकोंके जीवोंके देह मनुष्यके शरीरसे भी बुरे हुआ करते हैं; किन्तु उन्नत ग्रहके जीवोंके देह क्रमशः उन्नत ही होते हैं॥ मुझे अब लिखनेका समय नहीं है इन्हीं सब बातोंका ध्यान करके समझनेसे क्रमशः आप लोग परलोकको अच्छी तरह समझने लगोगे। दस्तखत—बेकन"।

तदनन्तर तारीख चौबीस मईको सभाका पुनः अधिवेशन हुआ, उस दिन आत्माओंकी आवाहनक्रिया करनेके अनन्तर पुनः लार्ड बेकन साहबका आत्मा आया पुनः प्रश्नोत्तर द्वारा आध्यात्मिक अनुसंधानकार्य चलने लगा।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

प्रश्न—आपने कहा था कि, आत्मागण जिस लोकमें रहते हैं उस लोकके बाहरका हाल नहीं जान सकते। इस अवस्था-को और भी जरा प्रकाशित करके वर्णन करिये।

उत्तर—पृथिवीसे जो उच्च लोक हैं उनमें यह शैली है कि, वहां उन्नत लोकोंके जीव निम्न लोकका संवाद जान सक्ते हैं। परन्तु उन उन्नत लोकोंमें ऐसे भी धार्मिक परलोकगामी आत्मा हुआ करते हैं कि, जो क्रमशः उन्नत होकर ईश्वरके निकटवर्ती अर्थात् बहुत ही उन्नत लोकको चले जानेके योग्य होजाते हैं; परन्तु ऐसा प्रारब्ध बहुत कम हुआ करता है। पृथिवीके निम्न ग्रहोंकी अवस्था इससे विपरीत है, क्योंकि वे सब लोक निकृष्ट हैं।

प्रश्न—ऐसे मूर्ख जीव भी क्या स्वर्गमें हैं कि, जो अपने ऊपरके लोकोंको न जानने कारण और कोई उन्नत लोक हो सकते हैं ऐसा नहीं मानते; अर्थात् अपनेको ही क्या वे सबसे उन्नत समझते हैं?

उत्तर—हाँ स्वर्गमें ऐसे भी जीव हैं जो अपनेको सबसे बढ़कर मानते हैं और अपने लोकसे कोई उन्नत लोक है ऐसा स्वीकार नहीं करते। वे सब बुरी आत्मा नहीं हैं, परन्तु उनके अहंकारसे ही उनमें यह अज्ञान रह गया है; यह पूर्व्व संस्कारका ही कार्य्य है, क्योंकि पृथिवीपर भी भले बुरे लोग हैं।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

प्रश्न—क्या ऊँचे लोकोंकी आत्मा भी यहाँ लौट कर आ सकती हैं एवं नीचे लोकोंकी आत्माएँ यहां आती हैं ?

उत्तर—हाँ ऊपरकी आत्मा अवनतिके कारण और नीचे की आत्मा उन्नतिके कारण कदापि पृथिवीमें आ सकें ।

प्रश्न—इस संसारमें देखते हैं कि, अच्छे जीवोंका सङ्ग बुरे जीवोंसे होता है, इस कारण अच्छे जीवोंको उन्नतिका अवसर नहीं मिलता, इस प्रकार क्या परलोकमें भी हुआ करता है ?

उत्तर—नहीं यह बात कदापि नहीं हो सकती; यह ईश्वर नियमके विरुद्ध है, ऐसा अविचार न पृथिवीपर है और न अन्य ग्रहोंमें हो सकता है; क्योंकि आत्माएँ कभी ऐसे स्थानोंमें नहीं रक्खी जा सकती; जहां उनके उन्नति करनेका अवसर उनको न मिलता हो। ईश्वरकी दया सब जीवोंपर समान है, इस कारण सब लोकोंमें जीवगणको उन्नति करनेका अवसर समान मिलता है। भेद इतना ही है कि, कर्म्म-साधनमें पृथिवीकी कुछ विलक्षणता है।

प्रश्न—परलोकगामी आत्मा क्या अपने पूर्व सम्बन्धको भूल जाते हैं अथवा पूर्व सम्बन्धियोंसे मनमें सम्बन्ध रखते हैं ?

उत्तर—यह जीवके आध्यात्मिक ज्ञानके अनुसार उसमें इस प्रकारका सम्बन्ध कम अथवा अधिक रह जाता है। परलोकगामी आत्मागण मनमें पूर्वस्मृति रखते हुए देख पड़ते हैं और अपने पुत्र कलत्र मित्रके सत् अथवा असत्

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

कर्म्मसे सुख अथवा दुःख अनुभव किया करते हैं। परन्तु यह अवस्था सबमें एक सी नहीं होती"।

ऊपर वर्णित घटनाओंसे स्पष्ट प्रमाणित होता है कि, परलोकके विषयमें अनुसन्धान करना आज कल पाश्चात्य जगत्‌का एक अत्यावश्यकीय व्यापार हो चला है और अध्यवसायी पश्चिम देशियोंने इस कार्य्यमें बहुत कुछ सफलता भी प्राप्त कर ली है। और यूरोपीय महायुद्धके बाद तो बहुत लोगोंकी दृष्टि इस अलौकिक सत्यपर पड़ी है। यहाँतक कि, इसाई धर्मावलम्बी बड़े बड़े विद्वान् जो इसाईमतके सिद्धान्तानुसार इन बातोंको एक बार ही नहीं मानते थे, अब वे भी इस मतके समर्थनमें बड़े बड़े ग्रंथ लिखते जाते हैं। अब नीचे इस अत्यावश्यकीय तथा रहस्यपूर्ण विषयमें आर्य्यशास्त्रमें कैसे कैसे प्रमाण तथा सिद्धान्त मिलते हैं, सो ही बताया जायगा। पहले ही कहा गया है कि, इस मृत्युलोकके सिवाय और सभी लोकोंकी परलोकसंज्ञा होनेपर भी प्रेतलोक, नरकलोक और पितृलोकको ही साधारणतः परलोक कहते हैं। इसी लिये इन तीनों लोकोंके विषयमें ही आर्य्यशास्त्रके सिद्धान्त कहे जायँगे। कठश्रुतिमें :—

'येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये अस्तीत्येके नायमस्तीति चैके'

अर्थात् परलोक है या नहीं इस विषयमें मनुष्योंको शङ्का होती है, इस प्रकार प्रश्न नचिकेताके मुखसे उठा कर, पश्चात् यह सिद्धान्त किया गया है कि :—

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

न साम्परायः प्रतिभाति बालं प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढ़म् ।
अयं लोको नास्ति पर इति मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे ॥

अर्थात् अज्ञानी प्रमादग्रस्त धनादि विषयोंमें आसक्त मूढ़ जनोंको परलोकके विषयमें ज्ञान नहीं हो सकता है। वे इह-लोकको ही सब कुछ समझकर परलोकपर अविश्वासी हो, पुनः पुनः जन्ममरण–चक्रमें परिभ्रमण करते रहते हैं। भगवती श्रुतिके इस सिद्धान्तके अनुसार स्मृति पुराणादि शास्त्रोंमें प्रेतलोक, नरकलोक तथा पितृलोकके विषयमें बहुत कुछ बातें कही गई हैं, जो नीचे क्रमशः बताची जाती हैं।

यह बात पहले ही कही गई है कि, आर्य्यशास्त्रमें भूर्लोकके अन्तर्गत चार लोक माने गये हैं। यथा—मृत्युलोक, प्रेतलोक, नरकलोक और पितृलोक। इनमेंसे मृत्युलोक स्थूल है, और तीनों लोक सूक्ष्म हैं। इनके स्थानोंके विषयमें श्रीमद्भागवतके ५म स्कन्धमें लिखा है, यथा :—

'नरक नाम भगवन् किं देशविशेषा अथवा बहिस्त्रिलोक्या आहोस्विदन्तराल इति।'

'अन्तराल एव त्रिजगत्यास्तु दिशि दक्षिणस्यामधस्ताद्भूमेरुपरिष्टाच्च जलाद्यस्यामग्निष्वात्तादयः पितृगणा निवसन्ति।'

'यत्र ह वाव भगवान् पितृराजो वैवस्वतः स्वविषयं प्रापितेषु स्वपुरुषैर्जन्तुषु परेतेषु यथाकर्मावद्यं दोषमेवानुल्लङ्घितभगवच्छासनः सगणो दमं धारयति।'

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

'तत्र हैके नरकानेकविंशतिं गणयन्ति'

भूर्लोकके भीतर ही दक्षिण-दिशामें पृथिवीके नीचे तथा जलके ऊपर अग्निष्वात्तादि पितृगण निवास करते हैं। यही पितृलोकका स्थान है। वहीं पर पितृलोकके राजा वैवस्वत यमका भी राज्य है। इसी यमलोकमें यमदूतगण मृत्युके बाद जीवगणको लाते हैं और वहींसे विचार होकर पाप-पुण्यानुसार जीवोंको सुख या सजा मिलती है। वहीं पर २१ नरक भी हैं। इससे सिद्ध हुआ कि, नरकलोक तथा पितृलोक पृथिवीकी दक्षिण-दिशामें हैं और दोनों ही भूर्लोकके भीतर हैं। श्रीभगवान् वेदव्यासने योगदर्शनभाष्यमें भी लिखा है :—

"अवीचेः प्रभृति मेरुपृष्ठं यावत् इत्येष भूर्लोकः। तत्रावीचेरुपर्युपरिनिविष्टाः षण्महानरक भूमयो महा-कालाम्बरीषरौरवमहारौरवकालसूत्रान्धतामिस्राः, यत्र स्वकर्मोपार्जितदुःखवेदनाः प्राणिनः कष्टमायुर्दीर्घमाक्षिप्य जायन्ते, ततः सप्त पातालानि।"

ऊपरके सप्त लोकोंके नीचे अवीचि नामक नरक स्थान है। उस अवीचिसे सुमेरुपृष्ठपर्य्यन्त स्थानको भूर्लोक कहते हैं। अवीचिसे ऊपर तथा पृथिवीसे नीचे छः नरकके स्थान हैं, जिनके नाम महाकाल, अम्बरीष, रौरव, महारौरव, काल-सूत्र और अन्धतामिस्र हैं। इनमें जीव निजकृत पापकर्म-

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

जन्य तीव्र दुःख भोगते हुए दीर्घजीवन व्यतीत करते हैं। अवीचिके नीचे अतल वितलादि सप्त अधोलोक हैं। देवी भागवतमें प्रेतलोक तथा नरकलोक और पितृलोकके विषयमें अनेक प्रमाण मिलते हैं, यथा—

पिशाचप्रेतभूतानां विहाराजिरमुत्तमम् ।
अन्तरिक्षं च तत्प्रोक्तं यावद् वायुः प्रवाति हि ॥

भूत प्रेतगण भूर्लोकके अन्तर्गत शून्यस्थानोंमें रहते हैं। इनका शरीर वायवीय होनेके कारण जहाँ तक वायु है, वहां तक वे रह सकते हैं। पितृलोकके विषयमें उसी पुराणमें वर्णन है—

त्रिजगत्या अन्तराले दक्षिणस्यां दिशीह वै ।
भूमेरधस्तादुपरि त्वतलस्य च नारद ॥
अग्निष्वात्ताः पितृगणा वर्त्तन्ते पितरश्च ह ।
पितृराजोऽपि भगवान् संपरेतेषु जन्तुषु ॥
विषयं प्रापितेष्वेषु स्वकीयैः पुरुषैरिह ।
सगणो भगवत्प्रोक्ताज्ञापरो दमधारकः ॥
नरकानेकविंशत्या संख्यया वर्णयन्ति हि ।
अष्टाविंशमितान् केचित्ताननुक्रमतो ब्रुवे ॥

भूर्लोकके भीतर ही दक्षिण दिशामें पृथिवीके नीचे तथा अतल लोकके ऊपर अग्निष्वात्तादि नित्य पितृगण और नैमित्तिक पितृगण रहते हैं। पितृलोकके राजा यम भी वहीं

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

पर रहते हैं और भगवान्‌के आज्ञानुसार पापियोंका दण्ड-विधान करते हैं। उनके दण्ड विधानस्थान इक्कीस या अन्य मतानुसार अट्ठाइस नरक भी उसी भूर्लोकके अन्तर्गत हैं। इन सब प्रमाणोंके द्वारा स्पष्ट सिद्ध हुआ कि, भूर्लोकके भीतर प्रेतलोक, नरकलोक तथा पितृलोक हैं, केवल मृत्यु लोक स्थूल है तथा बाकी तीन लोक सूक्ष्म हैं। यमलोक, पितृलोक आदिके विषयमें वेदमें भी प्रमाण मिलते हैं। यथा-अथर्ववेद ६-१२-११९ में यमलोकके विषयमें लिखा है—

'ऋणान्नो नर्णमेर्त्समानो यमस्य लोके अधिरज्जुरायत्।

हम लोगोंको ऐसा ऋण न हो जिससे ऋण देनेवाला उत्तमर्ण हाथमें रज्जु लेकर यमलोकमें हमें बाँधने आवे। इसी प्रकार बृहदारण्यकोपनिषद्‌में पितृलोकके विषयमें लिखा है—

'ये शतं मनुष्याणामानन्दाः स एकः पितृणां जितलोकानामानन्दः।

अर्थात् मर्त्यलोकके आनन्दका शत गुण आनन्द पितृ-लोकमें मिलता है। प्रेतलोकके विषयमें श्रीभगवान्‌ने गीतामें कहा है कि—

'भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्।'

प्रेतके उपासक प्रेतलोकको जाते हैं और भगवान्‌के उपासक भगवान्‌को ही प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार नरक-लोकके विषयमें भी श्रीभगवान्‌ने 'पतन्ति नरकेऽशुचौ' इस वचनके द्वारा अशुचि आदि नरकलोकके स्थानोंका वर्णन

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

किया है। अब नीचे इन सब लोकोंके अधिवासियोंके विषयमें क्रमशः वर्णन किया जाता है।

प्रथमतः प्रेतलोकके निवासियोंके विषयमें कहा जायगा। मृत्युके समय किन किन घटनाओंसे सूक्ष्म शरीरपर मूर्च्छा आकर मनुष्यको प्रेतयोनि प्राप्त होती है, इसका विस्तारित वर्णन श्रीधर्मकल्पद्रुम नामक ग्रन्थके 'वैराग्य और साधन' नामक अध्यायमें पहले ही दिया गया है, अतः पुनरुक्ति निष्प्रयोजन है। श्रीभगवान् मनुने अपनी संहिताके १२ वें अध्यायमें कर्मभ्रष्ट चार वर्णोंके मनुष्योंकी चार प्रकारकी प्रेतत्व प्राप्तिका वर्णन किया है, यथा—

वान्ताश्युल्कामुखः प्रेतो विप्रो धर्मात् स्वकात् च्युतः।
अमेध्यकुणपाशी च क्षत्रियः कटपूतनः॥
मैत्राक्षज्योतिकः प्रेतो वैश्यो भवति पूयभुक्।
चैलाशकश्च भवति शूद्रो धर्मात् स्वकाच्च्युतः॥

स्वधर्मभ्रष्ट ब्राह्मण वमन भक्षक उल्कामुख प्रेत होता है, कर्मभ्रष्ट क्षत्रिय शव तथा विष्ठाभक्षक कटपूतन नामक प्रेत होता है, कर्मभ्रष्ट वैश्य पूयभक्षक मैत्राक्षज्योतिक नामक प्रेत होता हैं और कर्मभ्रष्ट शूद्र कीटभक्षक चैलाशक नामक प्रत होता है। श्रीभगवान्ने गीताजीमें भी—

प्रेतान् भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः।

अर्थात् तामसिक लोग भूत प्रेतोंकी उपासना करते हैं, ऐसा कहकर प्रेतयोनिका अस्तित्व बताया है। अथर्ववेदमें

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

भूतप्रेतोंके विषयमें प्रचुर प्रमाण मिलते हैं। यथा-अथर्ववेद ८-३-६ में—

ये सूर्यं न तितिक्षन्त आतपन्तममुं दिवः।
अरायान् वस्तवासिनो दुर्गन्धींल्लोहितास्यान् मक्कान् नाशयामसि ॥

जो प्रेतगण सूर्यतेज सहन करनेमें असमर्थ होकर दिनमें छिपे रहते हैं, जो देखनेमें श्रीहीन, मेषचर्मपरिधानकारी, रक्तमुख तथा दुर्गन्धशरीर हैं, उनको मन्त्रशक्ति तथा द्रव्यशक्ति द्वारा नाश करेंगे। और भी २-२-६ में—

दशवृक्ष मुञ्चेमं रक्षसो ग्राह्या अधि यैनं जग्राह पर्वसु।
अथो एनं वनस्पते जीवानां लोकमुन्नय ॥

हे पलाशउदुम्बरादिदशवृक्षशकलनिर्मितमणे! तुम उस मनुष्यको जो कि, अमावास्यामें ब्रह्मराक्षस (एक प्रकारकी प्रेतयोनि) द्वारा आक्रान्त हुआ है, ब्रह्मराक्षसके आक्रमणसे मुक्त करो और उस मुमुर्षुको पुनर्जीवन दान करो। इत्यादि इत्यादि अनेक प्रमाण वेदमें भी प्रेतयोनिके विषयमें प्राप्त होते हैं और वर्त्तमान पाश्चात्य जगत्में इस विषयमें कैसे कैसे अनुसन्धान तथा आविष्कार होरहे हैं, इसका प्रचुर वर्णन पहले ही किया गया है अतः इस विषयके प्रति उपेक्षा न बताकर विश्वासके साथ अनुसन्धान तथा तत्त्व-निर्णय करना ही युक्तियुक्त होगा।

प्रेतलोक तथा उसके अधिवासियोंके विषयमें अभी कुछ ही दिनोंसे पश्चिम देशमें अनुसन्धान प्रारम्भ हुआ है; किन्तु

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

आर्यजातिके भीतर अति प्राचीन कालसे ही इस विषयमें अनेक गवेषणाएँ हो चुकी हैं और हो रही हैं। शवसाधनाकी विधि जो तन्त्रशास्त्रमें जहां तहां मिलती है, उसके द्वारा मृत शरीरमें प्रेतात्माको बुलाकर सिद्धि आदि लाभ, भविष्यत्कथन आदि रूप प्रक्रियाका कथञ्चित् आभास श्रीधर्मकल्पद्रुमके 'प्राण और पीठतत्त्व' नामक अध्यायमें पहले ही दिया गया है और उसी अध्यायमें पीठासन, प्राणविनिमय आदि प्रेत बुलानेकी और भी अनेक प्रक्रियाएँ बताई गई हैं। इन सब प्रक्रियाओंके द्वारा वर्षोंतक गवेषणा करके प्रेतलोक सम्बन्धीय जो कुछ बातें जानी गई हैं, उनका कुछ अंश उद्धृत किया जाता है।

"प्रेतका शरीर वायवीय होता है। इस लिये घरके द्वार बन्द रहनेपर भी किसी प्रकार छिद्र या वायुप्रवेशपथद्वारा प्रेत घरके भीतर प्रवेश कर सकता है। प्रेतका पाञ्चभौतिक स्थूलशरीर न रहनेपर भी वासनाके वेगके अनुसार प्रेत स्थूलशरीर धारण कर सकता है और दर्शनपथमें भी आ सकता है। जिसके साथ प्रेतके वासनाका सम्बन्ध हो उसको दिखाई दे सकता है। यथा—पति रूपधारण करके स्त्रीके पास आकर स्त्रीपुरुष जैसा बर्ताव भी कर सकता है, सन्तानादिके पास या प्रेमीके पास भी आ सकता है। वासनाके अनुसार प्रेत तरह २ का रूप भी धारण कर सकता है। यथा—वायुतत्त्वको आकर्षण करके आंधीके रूपमें मनुष्योंको डराना वा अग्नितत्त्वको आकर्षण करके अग्निमय रूपसे श्मशानादिमें

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

लोगोंको डराना आदि प्रेत कर सकता है; किन्तु सब प्रेतोंमें ऐसी शक्ति नहीं हो सकती है। जो जिस भावके आवेशमें प्रेत होता है, उसका आचरण प्रेतयोनिमें भी ऐसा ही होता है। प्रेत अनेक भावसे होते हैं। काम, मोह, धन-लोभ आदिके आवेशमें मरते समय उसीमें मूर्छा आकर सब प्रकारके प्रेत होते हैं। आत्महत्या करके एक प्रकारके प्रेत होते हैं। अकस्मात् वज्रपात या मकान आदि द्वारा दबकर मरनेसे एक प्रकारके प्रेत होते हैं। युद्धमें भीरुकी तरह मर कर एक प्रकारके प्रेत होते हैं। जिघांसावृत्तिके वशीभूत होकर आत्महत्या करनेसे एक प्रकारके प्रेत होते हैं। इन सबके अलग अलग आचरण होते हैं। कामुक प्रेत उस योनिमें भी कामचेष्टा ही करता है और ऐसे पुरुष प्रेत, स्त्रियोंपर या स्त्री प्रेत, पुरुषोंपर आविष्ट होनेकी चेष्टा करते हैं। मोहान्ध स्त्री पुरुष प्रेत मोहकी वस्तु पुत्रादिके पास आनेकी चेष्टा करते हैं, कभी कभी उनको मारकर अपनी योनिमें लानेका उद्योग करते हैं। धनलोभी प्रेत अपने जीवितावस्थामें उपार्जित धनकी ओर टकटकी लगाये रहते हैं, उसके खर्च हो जानेसे उन्हें बड़ा दुःख होता है। आत्मघात द्वारा प्रेतयोनि प्राप्त प्रेत अंधेरेमें रहना पसन्द करते हैं और आत्महननेच्छु स्त्रीपुरुषोंको आत्मघातके लिये उत्तेजित करते रहते हैं। वज्राघात आदिसे जो प्रेत होते हैं, वे निस्तब्ध होकर बैठे रहना और अफिमचीकी तरह झूमते

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

रहना पसन्द करते हैं। युद्धमें भीरुतासे मृत प्रेत कबन्ध होते हैं। उनके हाथमें अस्त्र रहता है। वे बड़े दुष्ट होते हैं, लोगोंको सताना, डराना आदि इनका काम होता है। इस श्रेणिके मुसलमान प्रेत जिन्द कहलाते हैं। लोगोंको भय, प्रलोभन आदि दिखाकर मारना, नाना भयानक दृश्य दिखाना आदि इनका काम होता है। जिघांसावृत्तिसे जो प्रेत बनता है, वह बड़ा ही भयानक अत्याचारी होता है। जिसपर जीवितावस्थामें उसका क्रोध या द्वेष रहता है, उसको मार ही डालता है।" इत्यादि इत्यादि नाना श्रेणिके प्रेत देखे गये हैं।

"सबको प्रेत नहीं दीखता है और सबको प्रेतकी बात भी नहीं सुनाई देती है। साधारणतः जिन जन्तुओंमें रातक देखनेकी शक्ति है, वे सब प्रेत देख सकते हैं, यथा-कुत्ते, बिल्ली, घोड़े, शेर इत्यादि। रातको कुत्ते जो प्रायः बोलते रहते हैं, वे केवल मनुष्य देखकर ही नहीं बोलते, परन्तु प्रेतकी मूर्त्ति देखकर भी उसे मनुष्य समझ कुत्ते बोलते रहते हैं। इसी प्रकार अनेक स्त्री-पुरुषोंमें प्रेत देखनेकी खास दृष्टि (Psychic sight) होती है। वे सब प्रेत देख सकते हैं। इनमेंसे किसी किसीको प्रेतकी बातें भी सुननेमें आती हैं। प्रेतकी बातें मनुष्यकी बातोंकी तरह वायुस्पन्दन द्वारा कानतक नहीं पहुंचती हैं। प्रेतको जब कुछ कहना होता है, तो वह तदनुरूप श्रोताके मनमें प्रेरणा करता है और

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

उसी प्रेरणा द्वारा भीतरसे श्रोताके कानोंमें टेलीफोनके शब्दकी तरह प्रेतकी बातें सुननेमें आजाती है। सब प्रेतोंकी प्रकृति एकसी नहीं होती है; बल्कि उनकी प्रकृति जीवितावस्थाकी प्रकृति जैसी ही प्रायः हुआ करती है। दुष्ट मनुष्य मर कर दुष्ट प्रेत ही होता है, अच्छा मनुष्य किसी कारणसे प्रेतयोनि प्राप्त होनेपर भी अच्छा ही रहता है, अत्याचार नहीं करता है। इस रीतिके अनुसार कई एक साधु प्रेतोंको भजन गाते हुए सुना गया है और भङ्गी प्रेतोंको विष्टा फेकते, पाखानेमें रहते और विष्टाकी टोकरी सिरपर लेचलते देखा गया है। सूर्यके प्रकाशमें प्रेतका बल घट जाता है। उसे प्रकाश सहन नहीं होता है। वह अन्धेरेमें रहना ही पसन्द करता है। इसका वैदिक प्रमाण भी पहले दिया जा चुका है। निशाचर जन्तुओंकी तरह प्रेतका बल सन्ध्या कालसे बढ़ने लगता है। उस समय प्रेत इधर उधर खानेके खोजमें घूमता रहता है। इस लिये सन्ध्या कालके भोजनपर प्रेतकी बड़ी दृष्टि रहती है। यही कारण है कि, आर्य शास्त्रमें ठीक सन्ध्याके समयभोजन करनेको निषेध किया गया है। प्रेत स्थूलरूपसे नहीं खाता है, वासना, मनके वेग तथा वेगमयी दृष्टिके द्वारा खाकर तृप्त हो जाता है। इस कारण किसीको खाते हुए देख कर, उस अन्नपर नजर लगानेसे प्रेतका पेट भर सकता है। स्थूल वस्तु न दे कर केवल मनकी भावना द्वारा चावल, रोटी, मिठाई आदि देनेपर भी उसी मनोमय

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

अन्नको मनोवेग द्वारा खाकर भी प्रेत तृप्त हो सकता है, प्रेतको देनेके नामसे ब्राह्मणादिको खिलानेपर भी उस समय ब्राह्मणोंको खाते हुए देख कर, प्रेतका पेट भर जाता है। यही सब प्रेतभोजनके प्रकार हैं। प्रेत असल खानेसे उच्छिष्ट खाना अधिक पसन्द करता है। इसी लिये उच्छिष्टपर प्रेतकी बड़ी नजर रहती है और आर्यशास्त्रमें उच्छिष्टभोजनको तामसिक तथा निषिद्ध भोजन कहा गया है। जिस वस्तुपर प्रेतकी दृष्टि पड़ जाय, वह असल हो या उच्छिष्ट हो, उसके खानेपर मनुष्यके पेटमें वह नहीं पचती है। उसको वमन आदि हो जाता है, वृक्षके फलपर प्रेतकी नजर पड़नेसे वह फल गिर जाता है, या सूख जाता है। भोजनकी तरह क्षुधा तृष्णा मलमूत्रादि त्याग सभी मानसिकरूपसे प्रेतोंमें उदय तथा मानसिकरूपमें ही उनका समाधान हो जाता है।"

"प्रेत एकान्त स्थानमें रहना पसन्द करता है। इसलिये उजाड़ मकान या स्थान, श्मशानादि स्थान, अन्धकारमय गृह, वृक्ष आदिमें प्रायः रहता है। जहाँ पर यज्ञ होता है, वेदध्वनि होती है, शास्त्रचर्चा होती है, शङ्ख घण्टाकी ध्वनि या देवताकी आरति होती है, वहांसे प्रेत दूर भागता है। ऐसा कई बार देखा गया कि, किसी व्यक्तिपर प्रेत आविष्ट होकर बात कर रहा है, इतनेमें शङ्ख घण्टाका शब्द होते ही प्रेत उसे छोड़ भाग गया। इसी प्रकार जल देख कर भी प्रेत डरता है। इस कारण प्रेत नदीपार नहीं जा सकता है। कभी

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

जाना हुआ तो किसी स्थूल अवलम्बनके द्वारा जा सकता है। जलसे प्रेतको इतना डर होनेके कारण ही नृसिंहकवचादि प्रेतबाधानाशन मन्त्रोंको प्रेताविष्ट व्यक्तिके गलेमें उसको पानीमें डुबकी लगवाकर बाँधना पड़ता है। जलकी तरह रामनाम, दुर्गानाम, गायत्री-मन्त्र आदिसे भी प्रेत बहुत डरता है। मंत्रोंके द्वारा प्रेत वशीभूत तो हो जाता है, किन्तु बलपूर्वक वश होनेके कारण वश करनेवाले पर बहुत ही नाराज रहता है और थोड़ा मौका मिलते ही उसको तथा उसके परिवारोंको मार डालनेकी चेष्टा करता है। प्रेत वशीभूत होकर रुपया, फल वगैरह ला दे सकता है। प्रेत बहुत थोड़े समयमें दूर दूरसे दस बीस मन फल ला सकता है। प्रेत फलोंको उठा नहीं लाता है। किन्तु जहाँ फल है वहाँ तुरन्त पहुंच कर, फल देख आता है, पीछे चित्तकी तीव्र धारणासे फलादि बना देता है। इस लिये उन फलोंसे पेट नहीं भरता है और कभी कभी थोड़ी ही देरमें फलोंकी शकल बदल जाती है जैसा कि, आध घण्टे पहले जो फल था सो राख या मिट्टी बन गया इत्यादि। सब लोगोंपर प्रेतका आवेश नहीं हो सकता है, दुर्बलचित्त स्त्री-पुरुषोंपर तथा पुरुषसे अधिक स्त्रीपर प्रेतावेश हो सकता है। प्रेत चाहे जीवितावस्थामें किसी भाषाका बोलने वाला हो, प्रेत होनेपर अन्य भाषामें भी बोल सकता है, जिसपर आविष्ट हो, उसकी भाषामें भी बोल सकता है; क्योंकि वह आविष्ट व्यक्तिके मनमें प्रेरणा

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

करके उसकी जिह्वाको यन्त्र बनाकर बोलता है। मूर्खपर आविष्ट होकर विद्वान् प्रेत उसके मुखसे अच्छी संस्कृत या अंग्रेजीमें बात कर सकता है। इस प्रकार प्रेत दुर्बलचित्तके व्यक्तिमें स्वप्न भी दे सकता है, या स्वप्नावस्थामें उठा भी ले जा सकता है। प्रेतोंके अलग अलग हलके होते हैं, जिनके बाहर प्रेत जा नहीं सकते हैं। जिसका जो हलका है उसीके भीतर उस प्रेतको रहना पड़ता है। प्रत्येक हलकेमें प्रेतका शासक एक एक वेताल होता है। वेताल प्रेतयोनिसे ही बनते हैं, वे रङ्गमें काले तथा हाथमें लगुड़ लिये हुए होते हैं। वे प्रेतोंके वृथा घुमनेसे, अनधिकार प्रवेशसे या किसीपर अत्याचार करनेसे रोकते रहते हैं। शासनका अतिक्रम करनेपर वेताललोग प्रेतोंको खूब मारते हैं। इतना होने पर भी दुष्ट प्रेत कुकर्मसे निवृत्त नहीं होते हैं। विकृत-मस्तिष्क स्त्री-पुरुषोंपर प्रेतका बड़ाही प्रभाव रहता है इसलिये पागल स्त्री-पुरुष तथा पागलखानेमें प्रेत बहुत रहते हैं और पागलोंके मनपर प्रभाव डाल कर, उनसे अनेक अत्याचार आदि करवाते हैं। पञ्चतत्त्वोंमें किसी प्रकार विकार (Elemental disturbance) होनेपर प्रेतोंको बड़ा ही कष्ट होता है, जैसा कि प्रबल आंधी चलते समय प्रेतोंको बड़ा ही कष्ट होता है, आंधीके ह्रास वृद्धि के साथ साथ वायुशरीर प्रेतोंके शरीरमें भी सङ्कोच विकाश होता रहता है और प्राण निकलनेकी तरह अत्यन्त कष्ट होता है। प्रेतको अपने पूर्व शरीरपर बड़ा

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ही मोह होता है। इसलिये मृत्युके बाद श्मशानपर्यन्त उसीके साथ साथ रहता है। उसको आगमें जलाते समय प्रेतको बड़ा ही कष्ट होता है। मानों प्रेतका ही शरीर जल रहा हो ऐसा दुःख होता है। वह रोता पीटता रहता है, दुःखसे मूर्छित होने लगता है और जब तक शवदेह जलकर पूरा भस्म नहीं हो जाता है, प्रेत वहींपर उसे देखता रहता है और कभी कभी जल जानेके बाद भी श्मशानमें ही उसी स्थानमें रह जाता है। शीत वर्षा आदि ऋतुओंका प्रभाव प्रेतोंपर नहीं होता है। केवल मानसिकरूपसे ऋतुओंका अनुभव होता है। वज्रादि पतनके समय उसको भय मालूम होता है। वज्रपातसे मृत प्रेतको वज्रपातके समय बड़ा ही भय होता है। जलमें डूब कर मरनेवाले प्रेतको जल देख कर बड़ा ही भय होता है। अमावास्या रात्रिको प्रेत बड़ा ही बलीयान होता है। इसलिये प्रेतवशीकरण शवसाधन आदिके लिये यही रात्रि प्रशस्त है।"

"प्रेतजीवन बड़ा ही दुःखमय तथा अशान्तिमय है। प्रेतके हृदयमें सदा ही कुछ दाह बना रहता है, जिससे प्रेत कभी एक स्थानमें थोड़ी देर तक शान्तिसे ठहर नहीं सकता है। रात दिन अज्ञानान्धकारसे भरे हुए मूर्च्छामय चित्तके साथ रहना भी महा कष्टकर होता है। दाह क्यों हो रहा है, इसका भी ठीक ठीक पता प्रेतको नहीं लगता है। इसके सिवाय जिस वासनाके वेगसे उसे प्रेतयोनि प्राप्त हुई है,

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

वह वासना भी नहीं छुटती है, बल्कि उसकी अग्नि वृद्धिङ्गत ही होती रहती है। इसी वासनाग्निसे दग्धचित्त प्रेत स्थूल संसारमें उसकी चरितार्थताके लिये रात दिन प्रयत्न करता है, किन्तु प्रायः ही विफलमनोरथ होकर दुःखानलमें और भी व्याकुल हो जाता है। कामान्ध प्रेत कामकी वस्तुके पास, मोहान्ध प्रेत मोहके आधारके पास, धनान्ध प्रेत धनागारके पास आ कर उन सभोंसे मिलनेकी तथा स्थूल उपभोगोंकी प्राप्तिकी चेष्टा करता है। उन सभोंको अपने प्रेतलोकमें लानेके लिये भी प्रयत्न करता है। किन्तु लानेमें नाना कारणोंसे असमर्थ होकर बड़ा ही दुःखित होता है। किसीकी स्त्री मर कर प्रेतिनी हुई, उसके पतिने द्वितीय विवाह किया, नयी स्त्री पतिके पास आती है, इस दृश्यको देख कर मृत प्रेतिनी स्त्रीके चित्तमें बहुत ही ईर्ष्याजन्य दुःख होता है। किसीका बहुत धन था, वह मरते समय तक उसीको सोचता हुआ प्रेत बना, उसका धनलोभ नहीं छूटता है, वह जिस घरमें धन है, उसीमें रहता है, उसको खर्च होते हुए देखकर उसे दारुण कष्ट होता है इत्यादि प्रेतयोनिप्राप्त जीवोंके वासनाजन्य दुःख हैं। इन दुःखोंसे प्रेत रोता रहता है। अपने बदनको फाड़ता रहता है। उन्मत्तकी तरह घूमता रहता है, किन्तु कुछ उपाय उसे सूझता नहीं। श्मशानमें, एकान्तमें ऐसे दुःखसे रोते हुए कितने ही प्रेत देखे गये हैं। इसके सिवाय मृत्युके समय जिस कष्टसे उसकी मृत्यु हुई थी वह भी कष्ट बराबर

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

बना रहता है। एक कुलटा स्त्री जो छूरेके आघातसे मारी गई थी, उसके बदनमें प्रेतावस्थामें भी छूरेका दाग देखा गया। एक आत्महत्याकारी प्रेत वेतालोंके द्वारा बांध कर लाया गया। उस समय देखा गया कि, पागल या बांधे हुए वन्य पशुकी तरह उसकी अवस्था थी। जिसको प्राण निकलते समय जल नहीं मिला था, वह प्रेतयोनिमें तृष्णासे अधीर हो जल जल पुकारता रहता है। जिसका दुर्भिक्षमें प्राण गया था, वह हा अन्न हा अन्न करता रहता है। कदाचित् कोई उसे जल दे दे या आहार दे दे तभी कुछ शान्ति होती है। आर्यशास्त्रमें प्रेतयोनिप्राप्त जीवोंके इन्हीं सब दुःखोंको दूर करनेके लिये तथा प्रेतयोनिगत मूर्च्छाको तोड़ उन्हें अन्ययोनिमें डालनेके लिये श्राद्धक्रियाकी विधि बताई गई है। श्राद्धका ठीक ठीक अनुष्ठान होनेपर प्रेतयोनिसे जीवकी मुक्ति हो जाती है। और गयाश्राद्धसे तुरन्त प्रेतयोनिमुक्त होते देखा गया है। उस समय प्राक्तन कर्मानुसार उसे नरक, स्वर्ग आदि भोग होनेके बाद पुनः पृथिवीमें जन्म मिलता है।" यही प्रेतयोनि तथा प्रेतलोकके विषयमें आर्यशास्त्रका अनुभवसे प्राप्त सिद्धान्त है।

प्रेतलोकके निवासियोंके विषयमें आर्यशास्त्रका सिद्धान्त कह कर, अब नरकलोकके निवासियोंके विषयमें आर्यशास्त्रका सिद्धान्त कहा जाता है। नरकलोक कहांपर है और कितने नरक हैं, इस विषयके प्रमाण पहले ही दिये जा चुके हैं। उपनिषद्में भी लिखा है—

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

अनन्दा नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः ।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥

आत्मघाती पापी लोग मृत्युके अनन्तर घोर अन्धकारावृत दुःखमय नरकादि लोकोंमें जाते हैं। श्रीभगवान् मनुजीने अपनी संहिताके द्वादशाध्यायमें नरकके विषयमें बहुत कुछ वर्णन किया है, यथा—

यथा यथा निषेवन्ते विषयान् विषयात्मकाः ।
तथा तथा कुशलता तेषां तेषूपजायते ॥
तेऽभ्यासात् कर्मणां तेषां पापानामल्पबुद्धयः ।
सम्प्राप्नुवन्ति दुःखानि तासु तास्विह योनिषु ॥
तामिस्रादिषु चोग्रेषु नरकेषु विवर्तनम् ।
असिपत्रवनादीनि बन्धनच्छेदनानि च ॥
विविधाश्चैव सम्पीडाः काकोलूकैश्च भक्षणम् ।
करम्भवालुकातापान् कुम्भीपाकांश्च दारुणान् ॥
बहून् वर्षगणान् घोरान् नरकान् प्राप्य तत्क्षयात् ।
संसारान् प्रतिपद्यन्ते महापातकिनस्त्विमान् ॥

विषयसेवा द्वारा भोगस्पृहा और भी बलवती होकर जीवको परलोकमें दारुण दुःख प्रदान करती है। पापकर्मके फलसे तामिस्र, असिपत्रवन, बन्धनच्छेदन आदि नरक प्राप्ति,

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

उनमें नानाप्रकारका दुःखभोग, काक, उलूक आदि द्वारा भक्षण, बालुकाके ऊपरसे गमन, कुम्भीपाकमें भीषण दुःख आदि नरकयन्त्रणा पापीको भोगनी पड़ती हैं। इस प्रकारसे बहु-वर्षपर्यन्त दुःखभोगके बाद पुनः जीवका इस संसारमें जन्म होता है। नरकमें दुःख भोगते समय परलोकगत जीवको जो शरीर मिलता है, उसको यातनादेह कहते हैं। यह देह प्रेतके वायवीय शरीरसे एक बारही भिन्न है। प्रेतत्वावसानके बाद वायवीय शरीर नष्ट होजाता है। तब नरकभोगके लिये जीवको वृद्ध कलेवर यातनादेह या स्वर्ग भोगनेके लिये यौवनकलेवर तैजसदेह प्राप्त होता है। मृत्युके अनन्तर यमदूतगण आकर यातनादेहधारी जीवको किस प्रकार कष्ट देते हुए यमलोकमें लेजाते हैं और यमलोकमें विचार होनेके बाद रौरव, कुम्भीपाकादि नरकोंमें जीवको कैसे कैसे कष्ट दिये जाते हैं, इसके बहुत वर्णन आर्यशास्त्रमें मिलते हैं। श्रीमद्भागवतके ५ म स्कन्धके २६ वें अध्यायमें पूर्वकथित २१ नरकोंके वर्णन दिये गये हैं यथा—

"तत्र हैके नरकानेकविंशतिं गणयन्ति तामिस्रोऽन्ध-तामिस्रो रौरवो महारौरवः कुम्भीपाकः कालसूत्र-मसिपत्रवनं शूकरमुखमन्धकूपः कृमिभोजनः सन्दंशस्तप्त-शूर्मिर्वज्रकण्टकशाल्मली वैतरणी पूयोदः प्राणरोधो विशसनं लालाभक्षः सारमेयादनमवीचिरयः पानमिति।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

किञ्च क्षारकर्दमो रक्षोगणभोजनः शूलप्रोतो दन्दशूकोऽवटनिरोधनः पर्यावर्तनः शूचीमुखमित्यष्टाविंशति-नरका विविधयातनाभूमयः।

तामिस्र, अन्धतामिस्र, रौरव, महारौरव, कुम्भीपाक, कालसूत्र, असिपत्रवन, शूकरमुख, अन्धकूप, कृमिभोजन आदि २१ नरक हैं और किसीकिसी के मतमें क्षारकर्दम, रक्षोगण-भोजन, शूलप्रोत आदि और भी सात मिलाकर २८ नरक हैं, इनमेंसे किस किस नरकमें किस किस पापके फलसे जीवको दुःख भोगना पड़ता है, इसका वर्णन उसी अध्यायमें दिया गया है। यथा—

"यस्तु परवित्तापत्यकलत्राण्यपहरति स हि कालपाशबद्धो यमपुरुषैरतिभयानकैस्तामिस्रे नरके बलान्निपात्यते।"

"एवमेवान्धतामिस्रे यस्तु वञ्चयित्वा पुरुषं दारादीनुपभुङ्क्ते।"

"यस्त्विह वा एतदहमिति ममेदमिति भूतद्रोहेण केवलं स्वकुटुम्बमेवानुदिनं प्रपुष्णाति स तदिह विहाय स्वयमेव तदशुभेन रौरवे निपतति।"

जो दूसरेके धन, सन्तान या स्त्रियोंको चुराता है उसको कालपाशमें बाँध कर यमदूतगण तामिस्र नरकमें डालते हैं।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

जो परस्त्रीके साथ उसके पतिको वञ्चना करके कामसेवा करता है, वह अन्धतामिस्र नरकमें डाला जाता है। जो जीवोंको कष्ट देकर अपना कुटुम्बपोषण करता है उसको सब कुटुम्बोंको छोड़कर रौरव नरकमें जाना पड़ता है। इत्यादि रूपसे नाना पाप कर्मोंके अनुसार नरकभोगके वर्णन आर्यशास्त्रोंमें दिये गये हैं। वे सभी भोग यातनादेहमें सूक्ष्मरूपसे होते हैं तथा वे सब नरक भी सूक्ष्मलोकके अन्तर्गत होनेसे सूक्ष्म ही हैं। भोग द्वारा नरकोंमें पापका प्रायश्चित्त होनेके बाद अन्यान्य कर्मानुसार जीवका पुनः इस स्थूल संसारमें जन्म होता है। अथवा नरकसे स्वर्गमें जीव जा सकता है और स्वर्गसे भी नरकमें आ सकता है। इस विज्ञानका सिद्धान्त यह है कि, जब पुण्यभोग थोड़ा होता है, तो जीव पहले स्वर्गमें और पीछे नरकमें जाता है। जब पापका भोग थोड़ा होता है, तो पहले नरकमें जाता है और पीछे स्वर्गमें जाता है। इसका ज्वलन्त दृष्टान्त महाभारतमें यह है कि, जब महाराज युधिष्ठिर परलोकमें गये थे, तो उन्होंने देखा था कि, उनके भीम आदि भ्रातृगण नरकमें और दुर्योधन आदि स्वर्गमें थे। उसीपर यमराजसे प्रश्न करनेपर उनको ऊपर कथित उत्तर मिला था। दूसरी ओर यह भी निश्चय है कि, स्वर्ग अथवा नरकसे जीव प्रेतत्वमें नहीं आते हैं, क्योंकि प्रेतलोक मृत्युलोकके अति निकट है। जीवको यदि प्रेत होना हो, तो प्रथम प्रेतत्व पाकर पश्चात् अन्य सूक्ष्म लोकमें जायगा।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

नरक तथा नरकवासियोंका वर्णन करके अब पितृ-लोकवासियोंका वर्णन किया जाता है। पितृलोक-निवासी अग्निश्वात्ता, अर्यमादि नित्य पितृगण तथा इहलोकसे मृत्युके अनन्तर पितृलोकप्राप्त नैमित्तिक पितरोंके विषयमें बहुत कुछ वर्णन आर्यशास्त्रमें पाये जाते हैं। अथर्ववेदमें नित्य नैमित्तिक पितरोंके विषयमें अनेक प्रमाण मिलते हैं। यथा—अथर्ववेदके अष्टादश काण्डमें :—

"सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः"

दक्षिण भागमें आसीन होकर पितृगण सरस्वतीका आह्वान करते हैं।

"सरस्वती या सरथं यथाथोक्थैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ति"

(१८-१-१ + १८-२-२)

आह्वानसे सन्तुष्टा सरस्वती देवी स्वधाभोजी पितरोंके साथ आनन्दसे विराजमाना होती हैं।

उदीरतामवर उत परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुम् य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोवन्तु पितरो हवेषु॥

निकृष्ट, उत्कृष्ट तथा मध्यम श्रेणिके पितृगण जो सोम-सम्पादनकारी हैं, यजमानको प्राण देते हैं, अहिंसक तथा सत्यवित् हैं, वे आहूत होकर हमारी रक्षा करें।

इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो ये अपरास ईयुः।
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु दिक्षु॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

जो पितृगण पहले ही पितृलोकको चले गये हैं, जो अभी पृथ्वीलोकमें हैं और जो दस दिशाओंमें व्याप्त हैं, सबको नमस्कार।

मा त्वा वृक्षः सं बाधिष्ट मा देवी पृथिवी मही।
लोकं पितृषु वित्त्वैधस्व यमराजसु॥

हे प्रेत! तुम्हें वृक्ष बाधा न देवे, पृथिवी बाधा न देवे, तुम यमराजके लोकमें जाकर वहाँपर पितृलोकमें सुखसे रहो।

"सं विशन्त्विह पितरः स्वा नः स्योनं कृण्वन्तः प्रतिरन्तं आयुः"

इस यज्ञमें हमारे पूर्वज पितृगण आवें और तृप्त होकर हमें सुख तथा आयु प्रदान करें।

ये निखाता ये परोप्ता ये दग्धा ये चोद्धिता।
सर्वांस्तानग्न आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे॥

हे अग्नि! हमारे जो पितर भूमिमें गाड़े गये हैं, जो दूर देशमें फेंके गये हैं, जो जलाये गये हैं और जो संस्कारोत्तर पितृलोकमें स्थित हैं सबको हमारे दिये हुए हविर्भोजनके लिये यहांपर लाओ।

ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते।
त्वं तान् वेत्थ यदि ते जातवेद स्वधया यज्ञं स्वधितिं जुषन्ताम्॥

हमारे जो पितर अग्निमें जलाये गये थे या जो पृथिवीमें गाड़े गये थे, किन्तु अब स्वधापुष्ट होकर द्युलोकमें आनन्द करते हैं, उनको हे अग्ने! यदि तुम जानते हो तो कहो वह

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

हमारे प्रदत्त सुधासे तृप्त होवैं। इत्यादि इत्यादि अनेक प्रमाण नित्य या नैमित्तिक पितरोंके विषयमें वेदमें मिलते हैं। मनुसंहितामें भी पितरोंके विषयोंमें अनेक विचार किये गये हैं। यथा—तृतीय अध्यायमें:—

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ।
न्यस्तशस्त्रा महाभागाः पितरः पूर्वदेवताः ॥
मनोर्हैरण्यगर्भस्य ये मरीच्यादयः सुताः ।
तेषामृषीणां सर्वेषां पुत्राः पितृगणाः स्मृताः ॥
विराट्सुताः सोमसदः साध्यानां पितरः स्मृताः ।
अग्निष्वात्ताश्च देवानां मारीचा लोकविश्रुताः ॥
दैत्यदानवयक्षाणां गन्धर्वोरगरक्षसाम् ।
सुपर्णकिन्नराणाञ्च स्मृता बर्हिषदोऽत्रिजाः ॥
सोमपा नाम विप्राणां क्षत्रियाणां हविर्भुजः ।
वैश्यानामाज्यपा नाम शूद्राणान्तु सुकालिनः ॥
सोमपास्तु कवेः पुत्रा हविष्मन्तोऽङ्गिरः सुताः ।
पुलस्त्यस्याज्यपाः पुत्रा वशिष्ठस्य सुकालिनः ॥
अग्निदग्धानग्निदग्धान् काव्यान् बर्हिषदस्तथा ।
अग्निष्वात्तांश्च सौम्यांश्च विप्राणामेव निर्दिशेत् ॥
य एते तु गणा मुख्याः पितॄणां परिकीर्त्तिताः ।
तेषामपीह विज्ञेयं पुत्रपौत्रमनन्तकम् ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

पितृगण क्रोधशून्य, शौचपरायण, सदा ब्रह्मचारी और शस्त्रत्यागी, महात्मा तथा देवताओंके भी पूर्वतन हैं। ब्रह्मपुत्र मनुके जो मरीचि पुत्रगण हैं, उनके पुत्र सोमपादि पितृगण हैं। उनमेंसे सोमसद नामक विराट्के पुत्रगण साध्योंके पितर हैं। अग्निष्वात्ता नामक मरीचिपुत्रगण देवताओंके पितर हैं। ब्राह्मणोंके पितर सोमप, क्षत्रियोंके पितर हविर्भुज, वैश्योंके पितर आज्यप और शूद्रोंके पितर सुकालिनगण हैं। वर्हिषद् नामक अत्रिपुत्रगण दैत्य, दानव, यक्ष, गन्धर्व, सर्प, राक्षस, सुपर्ण, किन्नर इन सबके पिता हैं। भृगुपुत्रगण सोमप हैं, अङ्गिरापुत्रगण हविर्भुज हैं, पुलस्त्यपुत्रगण आज्यप हैं और वशिष्ठपुत्रगण सुकालिन हैं। अग्निदग्ध, अनग्निदग्ध, काव्य, वर्हिषद, अग्निष्वात्ता और सौम्य वे सभी ब्राह्मणोंके पितर हैं। स्थूल जगत्में जो मनुष्यगण हैं, उनको इन्हींके पुत्र-पौत्रादि वंशपरम्परा समझना चाहिये। यही सब आर्यशास्त्रकथित पितृलोकनिवासी नित्य-नैमित्तिक पितरोंके स्वरूप हैं।

नित्यपितृगणका क्या कार्य है, इनके द्वारा स्थूलजगत्की रक्षा, स्वास्थ्यवीर्यादि सम्पादन, ऋतुप्रवर्त्तन इत्यादि कार्य कैसे कैसे होते हैं सो सब धर्मकल्पद्रुमके ऋषिदेवपितृतत्त्व नामक अध्यायमें कहे जा चुके हैं। नैमित्तिक पितृगण पितृलोकमें जाकर नित्य पितरोंके साथ आनन्द करते हैं तथा उनके कार्य्यमें सहायता करते हैं। पितृलोक आनन्दमय है, इसके अनेक प्रमाण श्रुतिमें मिलते हैं। यथा—बृहदारण्यकमें—

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

"स यो मनुष्याणां राद्धः समृद्धो भवत्यन्येषामधि- पतिः सर्वैः मानुष्यकैर्भोगैः सम्पन्नतमः स मनुष्याणां परम आनन्दोऽथ ये शतं मनुष्याणामानन्दाः स एकः पितृणां जितलोकानामानन्दः।"

इस संसारमें राजा होकर तथा सकल लौकिकभोगके अधिकारी होकर जो सुख होता है, वही मनुष्यलोकके सुखकी पराकाष्ठा है, पितृलोकमें इस सुखका शतगुण अधिक सुख होता है। मर्त्यलोकके एक महीनेमें पितृलोकका एक अहोरात्र होता है। इस अहोरात्र क्रमसे बहुवर्ष तक पितरोंकी आयु है, जिसके अन्तमें अपना कर्त्तव्य तथा साधना समाप्त करते हुए पितृगण दैवराज्यमें ऐसे ही अभ्युदयको प्राप्त होते रहते हैं, जैसे इन्द्रादि देवगण क्रमशः आगे बढ़ते हैं।

नैमित्तिक पितृगण भोगकालपर्यन्त पितृलोकमें रहकर पुनः इस संसार में आजाते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि, नित्य पितृगण तो एक प्रकारके देवता हैं, अतः ऐश कर्मके अनुसार अभ्युदय और निःश्रेयसको प्राप्त होते हैं। और नैमित्तिक पितृगण इस मृत्युलोकसे पुण्यभोगके लिये पितृलोकमें जाते हैं, इसलिये पुण्यशेष हो जानेपर उन्हें पुनः इस मृत्युलोकमें आना पड़ता है। यही नित्य-नैमित्तिक पितरोंकी गतिके विषयमें आर्यशास्त्रका सिद्धान्त है।

परलोक विज्ञानका सारांश यह है कि, प्रत्येक ब्रह्माण्ड सात ऊर्द्ध्व लोक और सात अधोलोकरूपसे चौदह भागोंमें

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

विभक्त हैं, जैसा कि, ऊपर कहा गया है। इन चतुर्दश विभागोंका मध्य विभाग भूर्लोक समझा जाता है। वह भूर्लोक पुनः चार भागमें विभक्त है, जिनका नाम मृत्युलोक, प्रेतलोक, नरकलोक और पितृलोक है। इसी चतुर्विभागयुक्त भूर्लोकसे यद्यपि उग्रपुण्य करनेवाले जीव देवता अथवा असुर बन कर, देवलोकके दिव्य भोग और असुरलोकके आसुरीभोग भोगनेके लिये यथाक्रम ऊपरके भुवःस्वः आदि छः देवलोक और नीचेके अतल-वितलादि सात आसुरी लोकोंमें जाते हैं, क्योंकि यह भूर्लोक सबका केन्द्र है, परन्तु यह असाधारण नियम है कि, बड़ी तपस्या तथा पुण्यसे जीव भूर्लोकके बाहरके लोकोंमें जा सकता है, ऐसे साधारण रीतिसे नहीं जा सकता है। इस कारण भूर्लोकके साथ सम्बन्धयुक्त तीन सूक्ष्म लोक साधारण-रूपसे परलोक कहलाते हैं। और इन्हीं तीनोंका वर्णन साधारणतः परलोक नामसे शास्त्रोंमें पाया जाता है। वस्तुतः हमारे इस मृत्युलोकमें जब मनुष्यकी आयुका अन्त होता है तो वह जीव या तो प्रेतलोकमें जाता है या नरकलोकमें जाता है या पितृलोकमें जाता है, या इन तीनों या दो में जाता है और उसके अनन्तर पुण्य या पापका भोग समाप्त करके पुनः इस मृत्युलोकमें आ मातृगर्भमें जन्म लेता है। हमारे इस मृत्युलोकमें ही जीव मातृगर्भसे प्रकट होता है, अन्य लोकोंमें ऐसा नहीं होता है। मृत्युके अनन्तर जीवको तुरन्त ही एक आतिवाहिक देह मिलता है, जो लिफाफेके

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सदृश होता है। उस आतिवाहिक देहके द्वारा जीव अन्य सूक्ष्म लोकोंमें पहुंचाया जाता है, वहां जाते ही उसका आतिवाहिक देह छूट जाता है और वहां उस लोकके अनुरूप भोगदेह शीघ्र प्राप्त हो जाता है। यदि प्रेतलोकमें वह जाता है तो वेतालगण उसे ले जाते हैं, यदि नरकलोकमें जाता है तो यमदूतगण उसे ले जाते हैं, यदि पितृलोक या अन्यान्य ऊर्द्ध्व लोकमें जाता है तो देवदूतगण उसे ले जाकर तत्तत् लोकोंमें पहुंचाते हैं।

अबतक जगत्में परलोकविज्ञान केवल आर्य्यशास्त्रमें ही पाया जाता था। पृथिवीकी अन्यान्य जातियाँ अब तक परलोकको अन्य प्रकारसे मानती थीं, जैसा कि अब भी ईसाई धर्मावलम्बी तथा मुसलमान धर्मावलम्बी लोग मानते हैं। परन्तु प्रेतलोक, नरकलोक और पितृलोकका पता अब थोड़े ही दिनोंसे रूपान्तरमें यूरोप और अमेरिकाके गवेषणापरायण विद्वानोंको लगा है। इसमें सन्देह नहीं कि, अभी तक उन विद्वानोंको चतुर्दश भुवनोंका पता अथवा पितृ ऋषि और देवताओंका पता अथवा जैव ऐश सहज कर्मके रहस्यका पता जैसा कि धर्मकल्पद्रुमके कर्मतत्त्व नामक अध्यायमें कहा गया है अथवा नाना प्रकारके दैवी क्रियाओंका तथा सृष्टिका पता कुछ भी नहीं लगा है। परन्तु श्रीभगवान्की कृपासे वे इस स्पिरिच्यूयालिजम (Spiritualism) नामक विद्याके नाना प्रकार प्रश्न अनुसन्धान द्वारा केवल इतना

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

जानने लगे हैं कि, इस मृत्युलोकके अतिरिक्त दुःखमय प्रेतलोक और नरकलोक अवश्य है, और सुखभोगके लिये भी एक सुखपूर्ण लोक है। पाश्चात्य विद्वानोंके ग्रन्थोंके पाठ करनेसे यह निश्चय होता है कि, जिन जिन मृत आत्माओंसे उक्त अनुसन्धानकारियोंका साक्षात् सम्बन्ध पात्र (Medium) के द्वारा होता है वे आत्माएँ या तो प्रेतलोकके हैं या पितृलोकके। टेबलरैपिङ्ग आदि साधारण क्रियाओंके द्वारा जो मृतात्माओंके साथ उनका सम्बन्ध होता है, वे प्रायः प्रेतात्मा ही हैं, क्योंकि प्रेतगण मृत्युलोकके चारों ओर ही विचरते रहते हैं।

यान्त्रिक लेखप्रणालीमें भी प्रेतलोकके सम्बन्धका बहुत भय रहता है। आवेश करानेकी शैलीमें प्रेत और पितृगण दोनोंका ही सम्बन्ध रहता है। परन्तु दूसरोंके हाथसे मृत मनुष्योंका जैसे लेख निकलना यह कार्य पितृलोकके जीवगणके साथ ही सम्बन्ध रखता है। क्योंकि प्रेतोंमें इस प्रकारके लिखनेकी शक्ति नहीं होती है। इसमें सन्देह नहीं कि, परलोकमें जानेसे जीवोंके जैसे संस्कार होते हैं, उसी प्रकारके सुखभोगके सामान उन्हें पितृलोकमें प्राप्त होते हैं। इस कारण पश्चिम देशके वर्त्तमान अनुसन्धानमें ऐसे ही वर्णन पाये जाते हैं। यूरोप और अमेरिकाके अनुसन्धानकारी विद्वज्जन जितनी ही पवित्रता,श्रद्धा और योगयुक्त अन्तः-करणकी सहायता लेकर इस परलोक विज्ञानकी उन्नतिमें

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

तत्पर होते रहेंगे उतना ही वे हमारे पूज्यपाद महर्षियोंके वचनोंकी सत्यताको दिन प्रतिदिन अनुभव करते रहेंगे। *

इति शुभम्।

---

* यह प्रबन्ध श्रीमहामण्डल द्वारा प्रकाशित श्रीधर्मकल्पद्रुम नामक ग्रंथके सप्तम खण्डमें दिया गया है। सर्वसाधारणके उपकारार्थ पृथक् प्रकाशित किया जाता है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

श्रीविश्वनाथो जयति।

धर्मप्रचारका सुलभ साधन।

समाजकी भलाई! मातृभाषाकी उन्नति!!

देशसेवाका विराट् आयोजन!!!

इस समय देशका उपकार किन उपायोंसे होसकता है? संसारके इस छोरसे उस छोर तक चाहे किसी चिन्ताशील पुरुषसे यह प्रश्न कीजिये, उत्तर यही मिलेगा कि, धर्मभावके प्रचारसे, क्योंकि धर्मने ही संसारको धारण कर रक्खा है। भारतवर्ष किसी समय संसारका गुरु था, आज वह अधः-पतित और दीन हीन दशामें क्यों पच रहा है? इसका भी उत्तर यही है कि, वह धर्मभावको खो बैठा है। यदि हम भारतसे ही पूछें कि, तू अपनी उन्नतिके लिये हमसे क्या चाहता है? तो वह यही उत्तर देगा कि, मेरे प्यारे पुत्रों! धर्मभावकी वृद्धि करो। संसारमें उत्पन्न होकर जो व्यक्ति कुछ भी सत्कार्य करनेके लिये उद्यत हुए हैं, उन्हें इस बातका पूर्ण अनुभव होगा कि, ऐसे कार्योंमें कैसे विघ्न और कैसी बाधाएँ उपस्थित हुआ करती हैं। यद्यपि धीर पुरुष उनकी पर्वाह नहीं करते और यथासम्भव उनसे लाभ ही उठाते हैं, तथापि इसमें सन्देह नहीं कि, उनके कार्योंमें उन विघ्न-बाधाओंसे कुछ रुकावट अवश्य ही हो जाती है। श्रीभारत-धर्ममहामण्डलके धर्मकार्य्यमें इस प्रकारकी अनेक बाधाएँ होनेपर भी उसे जनसाधारणका हित-साधन करनेका सर्व-

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

शक्तिमान् भगवान्‌ने सुअवसर प्रदान कर दिया है। भारत अधार्मिक नहीं है, हिन्दुजाति धर्मप्राण जाति है, उसके रोम रोममें धर्मसंस्कार ओतप्रोत हैं। केवल वह अपने रूपको, धर्मभावको, भूल रही है। उसे अपने स्वरूपकी पहिचान करा देना-धर्मभावको स्थिर रखना ही श्रीभारतधर्ममहामण्डलका एक पवित्र और प्रधान उद्देश्य है। यह कार्य्य २२ वर्षोंसे महामण्डल कर रहा है और ज्यों ज्यों उसको अधिक सुअवसर मिलेगा, त्यों त्यों वह और शोरसे यह काम करेगा। उसका विश्वास है कि, इसी उपायसे देशका सच्चा उपकार होगा और अन्तमें भारत पुनः अपने गुरुत्वको प्राप्त कर सकेगा।

इस उद्देश्यसाधनके लिये सुलभ दो ही मार्ग हैं। (१) उपदेशकों द्वारा धर्म-प्रचार करना और (२) धर्म-रहस्य-सम्बन्धीय मौलिक पुस्तकोंका उद्धार और प्रकाश करना। महामण्डलने प्रथम मार्गका अवलम्बन आरम्भसे ही किया है और अब तो उपदेशक महाविद्यालय स्थापित कर, महामण्डलने वह मार्ग स्थिर और परिष्कृत कर लिया है। दूसरे मार्गके सम्बन्धमें भी यथायोग्य उद्योग आरम्भसे ही किया जा रहा है, विविध ग्रन्थोंका संग्रह और निर्माण करना, मासिकपत्रिकाओंका सञ्चालन करना, शास्त्रीय ग्रंथोंका आविष्कार करना, इस प्रकारके उद्योग महामण्डलने किये हैं और उनमें सफलता भी प्राप्तकी है, परन्तु अभी तक यह कार्य संतोषजनक नहीं हुआ है। महामण्डलने अब इस विभागको उन्नत करनेका विचार किया है। तदनुसार दस लाखके मूलधनसे भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेड नामकी कम्पनी महामण्डलने स्थापितकी है, उसके द्वारा कमसे कम दो लाख

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मूलधन लगाकर पुस्तकप्रकाशनका कार्य प्रारम्भ हो गया है। महामण्डलने अपनी संरक्षकतामें परिचालित निगमागमबुक-डिपो भी उक्त सिण्डिकेटको दे दिया है।

उपदेशकों द्वारा जो धर्मप्रचार होता है, उसका प्रभाव चिरस्थायी होनेके लिये उसी विषयकी पुस्तकोंका प्रचार होना परम आवश्यक है; क्योंकि वक्ता एक दो बार जो कुछ सुना देगा, उसका मनन बिना पुस्तकोंका सहारा लिये नहीं हो सकता। इसके सिवाय सब प्रकारके अधिकारियोंके लिये एक वक्ता कार्य्यकारी नहीं हो सकता। पुस्तकप्रचार द्वारा यह काम सहल हो जाता है। जिसे जितना अधिकार होगा, वह उतने ही अधिकारकी पुस्तकें पढ़ेगा और महामण्डल भी सब प्रकारके अधिकारियोंके योग्य पुस्तकें निर्माण करेगा। सारांश, देशकी उन्नतिके लिये, भारतगौरवकी रक्षाके लिये और मनुष्योंमें मनुष्यत्व उत्पन्न करनेके लिये महामण्डलने अब पुस्तकप्रकाशन विभागको उक्त सिण्डिकेट द्वारा अधिक उन्नत करनेका विचार किया है और उसकी सर्वसाधारणसे प्रार्थना है कि, वे ऐसे सत्कार्य्यमें इसका हाथ बटावें एवं इस ज्ञानप्रचारक कार्यमें इसकी सहायता कर, अपनी ही उन्नति कर लेनेको प्रस्तुत हो जावें।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलके व्यवस्थापक पूज्यपाद श्री १०८ स्वामी ज्ञानानन्दजी महाराजकी सहायतासे काशीके प्रसिद्ध विद्वानोंके द्वारा सम्पादित होकर प्रामाणिक, सुबोध और सुदृश्यरूपसे यह ग्रन्थमाला निकलेगी। ग्रन्थमालाके जो ग्रंथ छपकर प्रकाशित हो चुके हैं, उनकी नीचे सूची प्रकाशित की जाती है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

स्थिर ग्राहकोंके नियम।

(१) इस समय हमारी ग्रंथमालामें निम्नलिखित ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं :—

मंत्रयोगसंहिता (भाषानुवाद-सहित) १)
हठयोगसंहिता ,, ॥।)
योगदर्शन (भाषाभाष्य-सहित) २)
दैवीमीमांसादर्शन प्रथम भाग (भाषाभाष्यसहित) १॥)
कल्किपुराण (भाषानुवाद-सहित) १॥)
नवीन दृष्टिमें प्रवीण भारत १)
प्रवीण दृष्टिमें नवीन भारत २)
उपदेश पारिजात (संस्कृत) ॥)
भारतधर्ममहामण्डल रहस्य १)
धर्मकल्पद्रुम प्रथम खण्ड २)
,, द्वितीय खण्ड १॥)
,, तृतीय खण्ड २)
,, चतुर्थ खण्ड २)
,, पञ्चम खण्ड २)
,, षष्ठ खण्ड १॥)
श्रीमद्भगवद्गीता प्रथम खंड (भाषाभाष्यसहित) १)
गुरुगीता (भाषानुवादसहित) ।)
शम्भुगीता (भाषानुवाद-सहित) ॥)
धीशगीता ,, ॥)
शक्तिगीता ,, ॥।)
सूर्य्यगीता ,, ॥)
विष्णुगीता ,, ॥।)
संन्यासगीता ,, ॥।)
रामगीता (भाषानुवाद और टिप्पणी सहित सजिल्द) २॥)
आचारचन्द्रिका ॥)
नीतिचन्द्रिका ॥)
धर्मचन्द्रिका १)
साधन चन्द्रिका १॥।)
नित्यकर्म चन्द्रिका ।)

(२) इनमेंसे जो कमसे कम ४) मूल्यकी पुस्तकें पूरे मूल्यमें खरीदेंगे अथवा स्थिरग्राहक होनेका चन्दा १) भेज देंगे उन्हें शेष और आगे प्रकाशित होनेवाली सब पुस्तकें ¾ मूल्यमें दी जायँगी।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

(३) स्थिर ग्राहकोंको मालामें ग्रथित होनेवाली हर एक पुस्तक खरीदनी होगी। जो पुस्तक इस विभाग द्वारा छापी जायगी, वह एक विद्वानोंकी कमेटी द्वारा पसन्द करा ली जायगी।

(४) हर एक ग्राहक अपना नम्बर लिखकर या दिखाकर हमारे कार्यालयसे अथवा जहां वह रहता हो वहां महामण्डलकी शाखासभा हो, तो वहांसे, स्वल्प मूल्यपर पुस्तकें खरीद सकेगा।

(५) श्रीमहामण्डलकी जो धर्मसभा इस धर्म्मकार्य्यमें सहायता करना चाहे और जो सज्जन इस ग्रन्थमालाके स्थायी ग्राहक होना चाहें, वे मेरे नाम पत्र भेजनेकी कृपा करें।

गोविन्द शास्त्री दुगवेकर, अध्यक्ष शास्त्रप्रकाश विभाग,
श्रीभारतधर्ममहामण्डल प्रधान कार्यालय,
मार्फत भारतधर्मसिण्डिकेट लिमिटेड भवन,
स्टेशनरोड, जगतगञ्ज, बनारस शहर।

इस विभाग द्वारा प्रकाशित समस्त धर्मपुस्तकोंका विवरण।

सदाचारसोपान—यह पुस्तक कोमलमति बालक बालिकाओंके धर्मशिक्षाके लिये प्रथम पुस्तक है ... अपने बच्चोंकी धर्मशिक्षाके लिये इस पुस्तकको हर एक ... को मँगवाना चाहिये।

कन्याशिक्षासोपान—कोमलमति क... देनेके लिये यह पुस्तक बहुत ही उपयो...

धर्म्मसोपान—यह धर्मशिक्षा वि... है। बालकोंको इससे धर्मका साधा...

CC-0. Bharat Dharma Mahama...

जाता है। धर्मशिक्षा-पानेकी इच्छा करनेवाले सज्जन भी अवश्य इस पुस्तकको मँगावें। मूल्य।) चार आना।

ब्रह्मचर्य्यसोपान—ब्रह्मचर्य्यव्रतकी शिक्षाके लिये यह ग्रंथ बहुत ही उपयोगी है। मूल्य ≡) तीन आना।

साधनसोपान—यह पुस्तक उपासना और साधनशैलीकी शिक्षा प्राप्त करनेमें बहुत ही उपयोगी है। यह पुस्तक ऐसी उपकारी है कि, बालक और वृद्ध समानरूपसे इससे साधन-विषयक शिक्षा-लाभ कर सकते हैं। मूल्य।)

शास्त्रसोपान—सनातनधर्मके शास्त्रोंका संक्षेप सारांश इस ग्रंथमें वर्णित है। मूल्य।) चार आना।

धर्मप्रचारसोपान—यह ग्रन्थ धर्मोपदेशक देनेवाले उपदेशक और पौराणिक पण्डितोंके लिये बहुत हितकारी है।

मूल्य ≡) तीन आना।

राजशिक्षासोपान—राजा महाराज और उनके कुमारोंको धर्मशिक्षा देनेके लिये यह ग्रंथ बनाया गया है, परन्तु सर्वसाधारणकी धर्मशिक्षाके लिये भी यह ग्रंथ बहुत ही उपयोगी है। मूल्य ≡) तीन आना।

मन्त्रयोगसंहिता—योगविषयक भाषानुवादसहित ऐसा अपूर्व ग्रंथ आज तक प्रकाशित नहीं हुआ है। इसमें मंत्रोंका स्वरूप और उपा[illegible]निर्णय बहुत अच्छा किया गया है और नास्तिकोंके [illegible]ा, मन्त्रसिद्धि आदि विषयोंमें जो प्रश्न [illegible]भ्रम स्वरू[illegible] समाधान है। मूल्य १) एक रुपया।

(२) इनमेंसे जो योगविषयक ऐसा अपूर्व ग्रन्थ आज-मूल्यमें खरीदेंगे अथवा [illegible] है। इसमें हठयोगके ७ अङ्ग और देंगे उन्हें शेष और आगे [illegible] प्रणाली आदि सब अच्छी तरह मूल्यमें दी जायँगी। मूल्य ॥।) बारह आना।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

योगदर्शन—हिन्दीभाष्य सहित। इस प्रकारका हिन्दी भाष्य और कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है। प्रत्येक सूत्रका भाष्य प्रत्येक सूत्रके आदिमें भूमिका देकर ऐसा क्रमबद्ध बना दिया गया है कि, जिससे पाठकोंको ऐसा प्रतीत होगा कि महर्षि सूत्रकारने जीवोंके क्रमाभ्युदय और निःश्रेयसके लिये मानों एक महान् राजपथ निर्माण कर दिया है।

मूल्य २) दो रुपया।

दैवीमीमांसा दर्शन प्रथम भाग—वेदके उपासनाकाण्डका यह अङ्गिरा दर्शन है। इस प्रथम भागमें इस दर्शन शास्त्रके प्रथम दो पाद हिन्दी अनुवाद और हिन्दी भाष्यसहित प्रकाशित हुए हैं। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

कल्किपुराण—कल्किपुराणका नाम किसने नहीं सुना है। वर्तमान समयके लिये यह बहुत हितकारी ग्रन्थ है। विशुद्ध हिन्दी अनुवाद और विस्तृत भूमिका सहित यह ग्रंथ प्रकाशित हुआ है। धर्म जिज्ञासुमात्रको पढ़ना उचित है। मूल्य १॥)

नवीन दृष्टिमें प्रवीण भारत—भारतका प्राचीन गौरव और आर्यजातिका महत्त्व जाननेके लिये यह एक ही पुस्तक है। मू० १)

उपदेशपारिजात—यह संस्कृत गद्यात्मक अपूर्व ग्रंथ है।

मूल्य ॥) आठ आना

श्रीभारतधर्ममहामण्डलरहस्य—धर्मके [illegible] त्त्व भी इसमें बहुत अच्छी तरहसे बताये गये हैं। [illegible] रुपया

श्रीमद्भगवद्गीता प्रथम खण्ड—[illegible] गीताका अध्यात्म, अधिदैव, अधिभ[illegible] प्रत्येक श्लोका त्रिविध अर्थ और सब[illegible] समझने योग्य गीता-विज्ञानका [illegible] भाष्यमें मौजूद है।

CC-0. Bharat Dharma Mahaman

तत्त्वबोध—भाषानुवाद और वैज्ञानिक टिप्पणी सहित। यह मूल ग्रन्थ श्रीशङ्कराचार्यकृत है। मूल्य =) दो आना।

स्तोत्रकुसुमाञ्जलि मूल—इसमें पञ्चदेवता, अवतार और ब्रह्मकी स्तुतियोंके साथ साथ आज कलकी आवश्यकतानुसार धर्मस्तुति, गंगादि पवित्र स्थानोंकी स्तुति, वेदान्तप्रतिपादक स्तुतियाँ और काशीके प्रधान देवता श्रीविश्वनाथादिकी स्तुतियाँ हैं। मूल्य ।)

निगमागमचन्द्रिका—प्रथम और द्वितीय भागकी दो पुस्तकें धर्मानुरागी सज्जनोंको मिल सकती हैं। प्रत्येकका मूल्य १) एक रुपया।

(१) वर्लड्स इटरनल रिलिजन—यह सम्प्रति अंग्रेजी भाषामें एक ऐसा ग्रन्थ छप गया है, जिसके द्वारा सब अंग्रेजी पढ़े व्यक्तियोंको सनातनधर्मका महत्त्व, उसका सर्वजीव हितकारी स्वरूप, उसके सब अङ्गोंका रहस्य, उपासनातत्त्व, योगतत्त्व, काल और सृष्टितत्त्व, कर्मतत्त्व, वर्णाश्रमधर्मतत्त्व इत्यादि सब बड़े २ विषय अच्छी तरह समझनेमें आ जावेंगे। इसका मूल्य राजसंस्करणका ५) और साधारण संस्करणका ३) है। अंग्रेजी भाषामें आजतक सनातनधर्मका कोई भी ग्रन्थ ऐसा प्रकाशित नहीं हुआ था। ८ त्रिवर्ण चित्र भी इसमें दिये गये हैं।

व्रतोत्सव ... [illegible]—(अर्थात् हिन्दू त्यौहारोंका शास्त्रीय विवे[illegible] ...महामहोपदेशक पं० श्रवणलालजी वाणी ... मूल्य ३)।

(२) इनमेंसे जो ... मूल्यमें खरीदेंगे अथवा ... देंगे उन्हें शेष और आगे प्र... मूल्यमें दी जायँगी।

...र, निगमागमबुकडीपो।
...र्म सिण्डिकेट भवन, स्टेशनरोड
जगतगंज, बनारस (शहर)

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri